संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 332
पृष्ठ 8
रविवार
23 अगस्त 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- बच्चों को मोबाइल से...

विचार- जम्मू-कश्मीर पर अमेरिकी राजदूत...

खेल- गिल को कुलदीप पर भरोसा नहीं...

यूपी में पर्याप्त चीनी, परेशान न हों आमजन : योगी

मुख्यमंत्री ने की चीनी उपलब्धता की समीक्षा ,चीनी मिलों में 179.38 लाख कुंतल चीनी का भंडारण। भौतिक सत्यापन कराये जिलाधिकारी।

लखनऊ (संवाददाता)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेशवासियों को आश्वस्त किया कि राज्य में चीनी की कोई कमी नहीं है, आम नागरिक कतई परेशान न हों। प्रदेश की चीनी मिलों में वर्तमान में 179.38 लाख कुंतल चीनी का भंडार उपलब्ध है। चीनी मिलों ने दो महीने जून–जुलाई में 235 लाख कुंतल चीनी की बिक्री की है। सीएम ने निर्देश दिया कि आवश्यकता पड़ने पर चीनी मिलें 15 अक्टूबर से संचालित की जाएं।मुख्यमंत्री ने समीक्षा बैठक में कहा कि सहकारी चीनी मिलों में 23.60 लाख कुंतल, निगम की चीनी मिलों में 5.28 लाख कुंतल और निजी चीनी मिलों में 150. 50 लाख कुंतल कुल 179.38 लाख कुंतल चीनी प्रदेश में उपलब्ध है। जून व जुलाई में चीनी मिलों ने 235 लाख कुंतल चीनी की बिक्री की है, इसमें से अधिकांश चीनी अभी भी खुले बाजार में उपलब्ध है। आवश्यकता पड़ने पर 15 अक्टूबर से चीनी मिलों को संचालित किया जाए।सीएम ने अपील की कि चीनी की कमी बताकर भ्रम फैलाने वालों से सावधान रहें। मुख्यमंत्री ने प्रशासनिक अधिकारियों को निर्देश दिए कि चीनी की कालाबाजारी और भ्रम फैलाने वालों पर कड़ी कार्रवाई करें। उन्होंने भारत सरकार के निर्देश

के क्रम में कहा कि कोई भी डीलर 30 दिन से अधिक चीनी स्टॉक का भंडारण नहीं करेगा और वे एक समय में 400 टन से ज्यादा स्टॉक भी नहीं रख सकते। बल्क कंज्यूमर्स 10 मीट्रिक टन प्रतिमाह खपत भी 15 दिन से अधिक का स्टॉक नहीं रख सकते। चीनी मिलें अपने मासिक कोटे के अंतर्गत विक्रित चीनी को विक्रय की तिथि से 7 दिन से अधिक अवधि तक गोदाम में नहीं रोकेंगी। जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि जनपद की समस्त पंजीकृत चीनी मिलों, थोक एवं फुटकर विक्रेताओं के गोदामों का भौतिक सत्यापन कराते हुए उपलब्ध स्टॉक की वास्तविक स्थिति की रिपोर्ट प्राप्त करें। निर्धारित सीमा से अधिक स्टॉक धारित करने अथवा जमाखोरी पर कठोर कार्रवाई की जाए।

नोएडा में राजनाथ सिंह ने किया अत्याधुनिक डायग्नोस्टिक सेंटर का उद्घाटन, बोले

मेडिकल तकनीक से बीमारियों की पहचान अब ज्यादा सटीक

नोएडा (संवाददाता)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को नोएडा के सेक्टर–6 स्थित इंदिरा गांधी कला केंद्र सभागार में महाजन इमेजिंग एंड लैब्स के नए इंटीग्रेटेड डायग्नोस्टिक सेंटर का उद्घाटन किया। इस मौके पर नोएडा सांसद डॉ. महेश शर्मा के साथ लोकसभा सांसद बांसुरी स्वराज भी उपस्थित रहीं। यह केंद्र उत्तर प्रदेश में कंपनी का पहला सेंटर है, जो दिल्ली और हरियाणा के बाद यूपी में अपने विस्तार की शुरुआत नोएडा से कर रही है। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में मेडिकल तकनीक ने अभूतपूर्व प्रगति की है। पहले जिन बीमारियों का पता लगाना काफी मुश्किल होता था, अब आधुनिक जांच तकनीकों के माध्यम से उनकी पहचान जल्द और अधिक सटीक तरीके से संभव हो पा रही है। अच्छी जांच व्यवस्था का उद्देश्य केवल बीमारी का पता लगाना नहीं, बल्कि मरीज को अनावश्यक जांच और गलत निदान से बचाना भी होना चाहिए। रक्षा मंत्री ने आधुनिक स्वास्थ्य व्यवस्था में एकीकृत दृष्टिकोण को समय की जरूरत बताते हुए कहा कि रेडियोलॉजी, पैथोलॉजी और अन्य जांच सुविधाएं एक ही केंद्र पर उपलब्ध होने से मरीजों को बार–बार अलग–अलग स्थानों पर भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

चीनी की मिठास में मोदी सरकार की नीतियों ने कड़ वाहट घोली : खरगे

नयी दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने चीनी की बढ़ती कीमतों को लेकर सरकार पर निशाना साधते हुए कहा है कि उसकी नीतियों के कारण त्योहारों से पहले चीनी की मिठास में कड़वाहट घुल गई है। श्री खरगे ने शनिवार को सोशल मीडिया एक्स पर सरकार से तीन सवाल पूछते हुए कहा कि दुनिया के बड़े चीनी उत्पादक और निर्यातक भारत में आज चीनी का भंडार नौ साल के निचले स्तर पर क्यों है और अब स्थिति चीनी का निर्यात रोकने तथा 10 लाख टन चीनी को शुल्क–मुक्त आयात करने तक किस कारण से पहुंची है। उन्होंने कहा कि तीन महीने में चीनी करीब 40 प्रतिशत महंगी हो गई है। त्योहारों से पहले जनता पर पड़ी महंगाई की इस मार का जिम्मेदार कौन है। जब देश में चीनी की कमी है और सरकार विदेश से चीनी मंगा रही है तो गन्ने और अनाज को ई–20 के लिए एथनॉल बनाने में झोंकने की नीति की समीक्षा क्यों नहीं की जा रही है। कांग्रेस अध्यक्ष ने सवाल करते हुए कहा, ''ये कैसा आत्मनिर्भर भारत है। पहले चीनी का उत्पादन घटा, फिर स्टॉक नौ साल के निचले स्तर पर पहुंचा, अब विदेश से चीनी आयात कर रहे हैं और दूसरी तरफ गन्ने को पेट्रोल में मिलाने के लिए इथेनॉल में झोंक रहे हैं।'' श्री खरगे ने कहा कि त्योहारों से पहले सरकार को चीनी की बढ़ती कीमतों और ई–20 नीति के प्रभाव की समीक्षा करनी चाहिए।

न्याय–नॉमिक्स से ही बढ़ेगी अर्थव्यवस्था

सीजेआई सूर्यकांत का बयान, बोले– केवल भूगोल से नहीं मिलती तरक्की

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली में आयोजित 11वें ब्रिक्स लीगल फोरम को संबोधित करते हुए भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने एक महत्वपूर्ण विचार सामने रखा। उन्होंने कहा कि देश की आर्थिक वृद्धि सिर्फ भूगोल की किस्मत या प्राकृतिक संसाधनों के भरोसे नहीं टिकी रह सकती। आर्थिक विकास को मजबूत और टिकाऊ बनाने के लिए श्न्याय–नॉमिक्सश यानी न्याय के अर्थशास्त्र की जरूरत है। सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि कानूनी संस्थाएं विकास के आसपास बाद में खड़ा किया गया कोई ढांचा नहीं होतीं, बल्कि वे खुद विकास का मुख्य आधार और वास्तुकला होती हैं। अगर इस आधार को हटा दिया जाए, तो उभरती हुई अर्थव्यवस्था केवल सौभाग्य का एक ढेर नजर आएगी, जो किसी भी बड़े संकट में ढह सकती है। मुख्य न्यायाधीश ने बताया कि

जब अदालतें निष्पक्ष और लगातार सही फैसले देती हैं, तो लोगों का न्याय प्रणाली पर भरोसा बढ़ता है। इससे हर व्यापारिक लेनदेन की लागत कम होती है। बाजार में सभी के लिए समान अवसर बनते हैं, जिससे व्यापार और अर्थव्यवस्था को सीधा बढ़ावा मिलता है।

भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने इस बात पर जोर दिया कि भारत समेत ब्रिक्स का कोई भी देश केवल अपने संसाधनों के बल पर आगे नहीं बढ़ा है। इन देशों का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि वहां वादों और समझौतों को कानूनी रूप से कितना मजबूती से लागू कराया जाता है।

भाषण के दौरान सीजेआई ने श्न्याय सेतुश का विचार भी दिया। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा पुल है जो 11 अलग–अलग देशों की कानूनी परंपराओं को आपस में जोड़ता है। इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि देश आपस में भरोसे का माहौल खुद बनाएं, न कि किसी चमत्कार का इंतजार करें।

सीएम सुक्खू बोले- जल शक्ति विभाग में चार हजार मल्टी टास्क वर्कर भर्ती करेगी सरकार

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश सरकार जल शक्ति विभाग में 4 हजार मल्टी टास्क वर्करों के पद भरने जा रही है। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने विधानसभा में विधायक भुवनेश्वर गौड़ के सवाल के जवाब में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विभाग में खाली पदों को भरने की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जा रही है, जिससे

विभागीय कामकाज को गति मिलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के लोक निर्माण विभाग, जल शक्ति विभाग और बिजली बोर्ड में खाली पदों को भी चरणबद्ध तरीके से भरा जाएगा। जल शक्ति विभाग में चार हजार मल्टी टास्क वर्करों की भर्ती इसी दिशा में एक अहम कदम है। मुख्यमंत्री ने बताया कि बिजली बोर्ड में भी खाली पदों के अनुरूप बिजली मित्रों की भर्ती की जाएगी। इसके लिए संबंधित क्षेत्र के अधिशासी अभियंता को अधिकृत किया गया है। अधिकारी अपने क्षेत्र में उपलब्ध रिक्तियों के आधार पर बिजली मित्रों की नियुक्ति कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि बिजली मित्रों की भर्ती में स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। इससे स्थानीय स्तर पर युवाओं को रोजगार के अवसर मिलने के साथ बिजली बोर्ड के कामकाज में भी सहयोग मिलेगा।

श्रमिक सुरक्षा कमजोर होने का खतरा

सुप्रीम कोर्ट ने बदली उद्योग की परिभाषा, कांग्रेस ने उठाए सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने शनिवार को सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले पर चिंता जताई, जिसमें कहा गया है कि श्उद्योगश शब्द की 1978 में दी गई श्रमिक हितैषी व्याख्या औद्योगिक संबंध संहिता, 2020 के तहत नए मामलों पर लागू नहीं होगी। पार्टी ने कहा कि कानून को श्उद्योगश की व्यापक परिभाषा से सीमित करने या उससे अलग करने की कोई भी कोशिश श्रमिकों के संरक्षण को कमजोर कर सकती है।

कांग्रेस महासचिव और संचार प्रभारी जयराम रमेश ने दावा किया कि मोदी सरकार की औद्योगिक संबंध संहिता, 2020 ने हमारे श्रमिकों के लिए जरूरी सुरक्षा उपायों को काफी कमजोर कर दिया है। जयराम रमेश ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि इसी पृष्ठभूमि में सुप्रीम कोर्ट की बहुमत वाली पीठ ने 20 अगस्त 2026 को उत्तर प्रदेश राज्य बनाम जय बीर सिंह मामले में अपने 1978 के चर्चित फैसले में तय श्ट्रिपल टेस्टश को नए सिरे से तय करने की परिकल्पना की है। यह ट्रिपल टेस्ट फरवरी 1978 के बंगलूरू वाटर सप्लाई एंड सीवरेज बोर्ड बनाम ए राजप्पा मामले में तय किया गया था। उन्होंने कहा कि श्उद्योगश की व्याख्या का महत्व इस कानूनी स्थिति से जुड़ा है कि कौन श्कामगारश माना जाएगा और इसके आधार पर किसे श्रम कानूनों का संरक्षण मिलेगा। रमेश ने कहा, श्श1978 के बंगलूरू वाटर सप्लाई मामले में सुप्रीम कोर्ट ने तीन तत्व बताए थे, जो आम तौर पर किसी उद्योग की पहचान करते हैं। इनमें व्यवस्थित गतिविधि, नियोक्ता और कर्मचारी के बीच सहयोग तथा लोगों की जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन या वितरण शामिल है। हालांकि, पूरी तरह आध्यात्मिक या धार्मिक सेवाओं को इससे बाहर रखा गया था।

रमेश ने कहा कि अदालत ने यह भी स्पष्ट किया था कि लाभ कमाना जरूरी नहीं है। धर्मार्थ संस्थाओं या सार्वजनिक निकायों की गतिविधियां भी श्उद्योगश की परिभाषा में आ सकती हैं। रमेश के मुताबिक, इसका एकमात्र अपवाद संप्रभु कार्य थे, जैसे न्यायपालिका, कानून–व्यवस्था और रक्षा से जुड़े काम।

मिड–डे मील खाते ही फूड पॉइजनिंग का शिकार हुए बच्चे

सरकारी स्कूल की व्यवस्था सवालों के घेरे में

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर जिले के सांवेर क्षेत्र स्थित धरमपुर के शासकीय माध्यमिक विद्यालय में शनिवार दोपहर करीब 1रू30 बजे मिड–डे मील खाने के बाद 38 बच्चों की तबीयत अचानक बिगड़ गई। कढ़ी–चावल खाने के कुछ देर बाद ही विद्यार्थियों ने पेट दर्द, चक्कर आने और सिरदर्द की शिकायत की। स्थिति को देखते हुए स्कूल प्रबंधन ने तुरंत परिजनों को सूचित किया और बच्चों को इलाज के लिए इंदौर के अरविंद अस्पताल पहुंचाया। अस्पताल में 19 बच्चों को भर्ती किया गया है, जिनमें से 4 बच्चों को गहन चिकित्सा इकाई यानी आईसीयू में रखा गया है। डॉक्टरों का कहना है कि भर्ती बच्चों में से एक बच्ची को

पिछले 3 दिन से बुखार भी आ रहा था। फिलहाल सभी बच्चों को 6 घंटे के लिए ऑब्जर्वेशन में रखा गया है और किसी की भी हालत गंभीर नहीं है।एक साथ इतने बच्चों की सेहत बिगड़ने के बाद फूड पॉइजनिंग की आशंका जताई जा रही है। हालांकि, बीमारी की असली वजह भोजन की खराब गुणवत्ता थी या कोई अन्य कारण, यह अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सका है। स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन की टीम ने मामले की जांच शुरू कर दी है। टीम यह जानकारी जुटा रही है कि खाना कहां पकाया गया था, स्कूल तक कैसे लाया गया।

स्कूलों के दावों और जमीन पर हकीकत में फर्क, जाति-धर्म से निकलकर शिक्षा पर हो रही राजनीति : संजय सिंह

लखनऊ (संवाददाता)। आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने उत्तर प्रदेश की सरकारी शिक्षा व्यवस्था को लेकर योगी सरकार पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में स्कूलों की स्थिति को लेकर सरकार के दावों और जमीनी हकीकत में अंतर है। संजय सिंह ने दावा किया कि पार्टी के स्कूल ठीक करो अभियान के तहत अब तक करीब 55 सरकारी स्कूलों के वीडियो सामने आए हैं। संजय सिंह ने कहा कि इन वीडियो में प्रदेश के अलग–अलग जिलों के सरकारी स्कूलों की स्थिति दिखाई गई है। सरकार टाइल्स, टॉयलेट और डेस्क–बेंच जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने के दावे करती है, लेकिन कई स्कूलों में बच्चों को बुनियादी सुविधाएं तक नहीं मिल रही हैं। शिक्षा का मुद्दा अब राजनीति के केंद्र में आ रहा है। राजनीति जाति और धर्म से आगे बढ़कर शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और रोजगार जैसे सवालों पर हो रही है। संजय सिंह ने

कहा कि बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए सरकारी स्कूलों की व्यवस्था में सुधार जरूरी है। संजय सिंह ने बताया कि वाराणसी, गोरखपुर, अलीगढ़, नोएडा, गाजियाबाद और बागपत समेत कई जिलों से सरकारी स्कूलों के वीडियो भेजे गए हैं। उनका आरोप है कि कई जगह बच्चों के लिए जरूरी सुविधाएं तक नहीं हैं। कहीं क्लासरूम खराब हैं तो कहीं टॉयलेट की व्यवस्था ठीक नहीं है। आप सांसद ने अलीगढ़ का उदाहरण देते हुए आरोप लगाया कि कुछ सरकारी स्कूल ऐसी जगहों पर चल रहे हैं, जहां गाय,भैंस भी बंधी हुई हैं। उन्होंने कहा कि वाराणसी से लेकर गोरखपुर और पश्चिमी यूपी के जिलों तक स्कूलों की ऐसी तस्वीरें सामने आ रही हैं। संजय सिंह ने नोएडा, गाजियाबाद और बागपत के स्कूलों का जिक्र करते हुए कहा कि नोएडा को हाईटेक सिटी कहा जाता है। इसके बावजूद वहां सरकारी स्कूलों की स्थिति पर सवाल उठ रहे हैं।

सिविल लाइंस से अलोपीबाग तक दौड़ेगी एसी डबल डेकर बस, न्यूनतम किराया 20 रुपये

प्रयागराज। प्रयागराज के शहरवासियों के लिए बड़ी खुशखबरी है। अब शहर में मेट्रो जैसी आधुनिक यात्रा का रोमांच डबल डेकर बस में मिलेगा। यूपी रोडवेज ने हाईटेक एसी डबल डेकर बस का सफल ट्रायल पूरा कर लिया है। शुरुआती चरण में यह बस सिविल लाइंस से अलोपीबाग के बीच दौड़ेगी। 65 सीटों वाली इस बस में सीसीटीवी कैमरे और महिलाओं की सुरक्षा के लिए पैनिक बटन जैसी आधुनिक सुविधाएं भी मौजूद हैं। खास बात यह है कि बस का किराया सिर्फ 20 से 30 रुपये रखा गया है। शहरवासियों को मेट्रो जैसी आधुनिक तर्ज पर डबल डेकर बस में सफर करने

का रोमांच मिलेगा। शुक्रवार को उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम (यूपी रोडवेज) ने इस हाईटेक बस का सफल ट्रायल पूरा कर लिया है। शुरुआती चरण में बस का संचालन सिविल लाइंस से अलोपीबाग के बीच किया जाएगा। यह वातानुकूलित (एसी) डबल डेकर बस आधुनिक सुविधाओं से लैस है। इसमें कुल 65 सीटें बनाई गई हैं। यात्रियों की सुरक्षा और संरक्षा का विशेष ध्यान रखते हुए बस के भीतर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, साथ ही महिलाओं की सुरक्षा के लिए पैनिक बटन की सुविधा भी दी गई है। रोडवेज प्रशासन ने इसका न्यूनतम किराया 20 रुपये और अधिकतम किराया 30 रुपये तय किया है, जो आम जनता के बजट में पूरी तरह फिट बैठता है। फिलहाल मुख्यालय से केवल एक ही बस मिली है। क्षेत्रीय प्रबंधक रविंद्र कुमार सिंह के अनुसार जल्द ही इसे नियमित रूट पर उतार दिया जाएगा।

रामबाग रेलवे स्टेशनः पांच दिन से रेल ट्रैक डूबा होने पर अफसरों पर भड़के जीएम, तत्काल पानी निकालने का निर्देश

प्रयागराज। पांच दिन से पानी में डूबे प्रयागराज रामबाग रेलवे स्टेशन के ट्रैक पर महाप्रबंधक प्रभाष दनसाना का गुस्सा फूट पड़ा। शुक्रवार को निरीक्षण के दौरान प्लेटफॉर्म नंबर एक से चार तक जलमग्न ट्रैक देखकर उन्होंने नाराजगी जताई और अधिकारियों को जल्द से जल्द पानी निकालकर ट्रैक पूरी तरह खाली कराने

के कड़े निर्देश दिए। पांच दिन से पानी में डूबे प्रयागराज रामबाग रेलवे स्टेशन के ट्रैक पर महाप्रबंधक प्रभाष दनसाना का गुस्सा फूट पड़ा। शुक्रवार को निरीक्षण के दौरान प्लेटफॉर्म नंबर एक से चार तक जलमग्न ट्रैक देखकर उन्होंने नाराजगी जताई और अधिकारियों को जल्द से जल्द पानी निकालकर ट्रैक पूरी तरह खाली कराने के कड़े निर्देश दिए। महाप्रबंधक ने भविष्य के लिए सख्त व्यवस्था करने को कहा ताकि कभी भी भारी बारिश के बाद रेलवे स्टेशन और कॉलोनी में इस तरह की जलभराव की स्थिति दोबारा न बने। महाप्रबंधक ने वाराणसी मंडल के डीआरएम आशीष जैन के साथ बनारस–प्रयागराज रामबाग रेलखंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया, जिसके बाद वह रामबाग स्टेशन पहुंचे। निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने स्टेशन के प्रतीक्षालय, फुट ओवरब्रिज, टिकट काउंटर, प्लेटफॉर्म, पानी के बूथ, दिव्यांगजन सुविधाओं और सर्कुलेटिंग एरिया का भी जायजा लिया। अधिकारियों को ताकीद की गई कि जल निकासी की पुख्ता व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि भविष्य में तेज बारिश होने पर भी स्टेशन और पटरियों पर पानी न टिक सके।

हाईकोर्टः पता लगाएं... क्या वास्तव में कैदी की सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मी आला अधिकारी की कार चलाने गया था

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने राज्य सेवा न्यायाधिकरण को कैदी के हिरासत से फरार होने के आरोप में पुलिसकर्मी का एक माह का वेतन काटे जाने की सजा पर दोबारा विचार करने का आदेश दिया है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने राज्य सेवा न्यायाधिकरण को कैदी के हिरासत से फरार होने के आरोप में पुलिसकर्मी का एक माह का वेतन काटे जाने की सजा पर दोबारा विचार करने का आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि नए आदेश में स्पष्ट किया जाए कि अस्पताल में तैनात पुलिसकर्मी क्या वास्तव में आला अधिकारी की निजी कार चलाने गया था।

यह आदेश न्यायमूर्ति अरिंदम सिन्हा और न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह की खंडपीठ ने कासगंज में तैनात रहे सिपाही हर्ष वर्धन शर्मा की याचिका पर दिया। याची ने दंडादेश के साथ अपीलीय, पुनरीक्षण आदेश और सेवा न्यायाधिकरण के चार दिसंबर 2025 के आदेश को चुनौती दी थी। न्यायाधिकरण ने निलंबन अवधि तक का पूरा वेतन–भत्ता बहाल करने की राहत तो दी थी पर 30 दिन का वेतन रोकने की सजा बरकरार रखी थी। हाईकोर्ट ने आदेश के इस हिस्से पर नए सिरे से विचार के लिए न्यायाधिकरण को वापस भेज दिया।

याची ने दलील दी कि उसे अपने उच्चाधिकारी की निजी गाड़ी चलाने का निर्देश दिया गया था। इसके बाद उसे अस्पताल पहुंचने के लिए कहा गया, जहां इलाज के दौरान एक कैदी के फरार होने की घटना हो चुकी थी। वह खुद कैदी की खोज में जुटी पुलिस टीम के साथ तलाश में लगा था। उस कैदी को उसने सरसों के खेत से दोबारा पकड़ लिया था।

वहीं, राज्य साकार की ओर से दलील दी गई कि याची का बयान विरोधाभासी है। उसके अनुसार वह अस्पताल में रिपोर्ट करने गया था, जबकि याची का दावा है कि उसे पहले अधिकारी की निजी कार चलाने भेजा गया था। कोर्ट ने कहा कि न्यायाधिकरण को उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यह तथ्य तय करना होगा कि याची को कैदी की सुरक्षा के लिए पुलिस बल के सदस्य के रूप में तैनात किया गया था या उसे उच्चाधिकारी की निजी कार चलाने का आदेश दिया गया था।

बाढ़ का खतराः गंगा–यमुना के जलस्तर में फिर तेजी, खतरे के निशान से 3.6 मीटर नीचे यमुना

प्रयागराज। प्रयागराज में गंगा और यमुना के जलस्तर में एक बार फिर तेजी देखने को मिल रही है। नैनी में यमुना का जलस्तर 80.69 मीटर, जबकि फाफामऊ में गंगा 81.11 मीटर पर पहुंच गई है। लगातार बढ़ते जलस्तर से नदी किनारे बसे इलाकों में चिंता बढ़ गई है। हालांकि प्रशासन के मुताबिक जिले के सभी तटबंध फिलहाल सुरक्षित हैं और स्थिति पर लगातार निगरानी रखी जा रही है।

गंगा और यमुना के जलस्तर में शनिवार को भी बढ़ोतरी जारी रही। सुबह आठ बजे जारी रिपोर्ट के अनुसार नैनी में यमुना का जलस्तर 80.69 मीटर दर्ज किया गया। पिछले 24 घंटे में जलस्तर में 37 सेंटीमीटर की बढ़ोतरी हुई है। वहीं फाफामऊ में गंगा 81.11 मीटर पर पहुंच गई, यहां भी 38 सेंटीमीटर की वृद्धि दर्ज की गई।

छतनाग में गंगा का जलस्तर 80.34 मीटर दर्ज किया गया, जो पिछले 24 घंटे में 37 सेंटीमीटर बढ़ा है। बक्शी बांध एसटीपी पर जलस्तर 80.88 मीटर दर्ज किया गया। प्रयागराज में गंगा–यमुना का खतरे का निशान 84.734 मीटर है।

यमुना के नैनी क्षेत्र में पिछले 24 घंटे में 10 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई, जबकि फाफामऊ और छतनाग में बारिश नहीं हुई। इसके बावजूद नदियों के जलस्तर में लगातार बढ़ोतरी से तटीय इलाकों में चिंता बनी हुई है। प्रशासन के अनुसार जिले के सभी तटबंध फिलहाल सुरक्षित हैं। जलस्तर में लगातार हो रही वृद्धि को देखते हुए नदी किनारे के क्षेत्रों में निगरानी बनाए रखने पर जोर दिया जा रहा है।

खतरे की ओर बढ़ा गंगा–यमुना का जलस्तर, प्रशासन अलर्ट

गंगा–यमुना के जलस्तर में बढ़ोतरी से संगमनगरी में बाढ़ का खतरा बढ़ने लगा है। शुक्रवार रात आठ बजे तक यमुना का जलस्तर नैनी में 80.59 मीटर गंगा का जलस्तर फाफामऊ में 80.87 मीटर और छतनाग में 80.17 मीटर पहुंच गया। लगातार बढ़ते जलस्तर को देखते हुए प्रशासन ने तटीय और निचले इलाकों में निगरानी बढ़ा दी है। खतरे का निशान 84.734 मीटर है।

शुक्रवार सुबह आठ बजे नैनी में यमुना का जलस्तर 80.32 मीटर था जो रात आठ बजे तक 27 सेमी बढ़कर 80.59 मीटर हो गया। इसी तरह फाफामऊ में गंगा 80.73 से बढ़कर 80.87 मीटर और छतनाग में 79.97 से बढ़कर 80.17 मीटर पहुंच गई। एसटीपी बक्शी बांध का जलस्तर भी 80.51 से बढ़कर 80.74 मीटर हो गया। कानपुर गंगा बैराज से शुक्रवार को करीब 3.04 लाख क्यूसेक पानी छोड़ने से प्रयागराज में शनिवार तक गंगा के जलस्तर में और वृद्धि के आसार हैं। नरौरा बैराज से करीब 1.34 लाख क्यूसेक और हरिद्वार से करीब 96 हजार क्यूसेक पानी छोड़ने की सूचना है। इससे गंगा के तटीय और निचले इलाकों में सतर्कता बढ़ा दी गई है।

चार घंटे में भी जारी रही बढ़ोतरी

शुक्रवार शाम चार से रात आठ बजे के बीच भी नदियों के जलस्तर में वृद्धि दर्ज की गई। नैनी में यमुना आठ सेमी, फाफामऊ में गंगा छह सेमी और छतनाग में गंगा छह सेमी बढ़ी। एसटीपी बक्शी बांध पर भी जलस्तर आठ सेमी बढ़ा।

राहत चौकियों को किया गया सक्रिय रू डीएम

डीएम मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि राहत चौकियों को सक्रिय कर दिया गया है। सभी उपजिलाधिकारियों और राजस्व कर्मियों को अपने–अपने क्षेत्रों में निगरानी के निर्देश दिए गए हैं। आवश्यकता पड़ने पर तत्काल राहत और बचाव कार्य शुरू करने के लिए कहा गया है। बाढ़ प्रभावित या संभावित प्रभावित लोगों से अपील की गई है कि वे सुरक्षित स्थानों और प्रशासन की ओर से बनाए गए शरणार्थी शिविरों में पहुंचें। शिविरों में आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं।

जलस्तर में बढ़ोतरी से क्षेत्र के 180 लोग राहत शिविर में पहुंचे

यमुनापार के शंकरगढ़ इलाके में टोंस और लोनी नदी के जलस्तर बढ़ने से शुक्रवार को कई गांव बाढ़ की चपेट में आ गए हैं। बराडीह, इटवा, देवरा, लोनीपार, ककरहा बस्ती, सिंहपुर और कॉलोनी बस्ती समेत आसपास के क्षेत्रों में बाढ़ का पानी पहुंचने से ग्रामीणों का जनजीवन प्रभावित हो गया है।

बाढ़ प्रभावित लोगों की सुरक्षा को देखते हुए लोनीपार स्थित जूनियर विद्यालय और प्राथमिक विद्यालय में राहत शिविर बनाए गए हैं। प्रशासन के अनुसार, करीब 180 लोगों को राहत शिविर में पहुंचाया गया है।

स्मार्ट सिटीः पानी का परदा हटा, सड़कों की खुली पोल, शहर की अधिकांश सड़कें क्षतिग्रस्त

प्रयागराज। चार दिन की बारिश ने शहर में हाल ही में बनी सड़कों की गुणवत्ता की पोल खोल दी है। कई इलाकों में डामर और गिट्टियां उखड़कर बह गईं तो कहीं सड़क धंसने से बड़े–बड़े गड्ढे बन गए। बारिश थमते ही इन सड़कों से उड़ती धूल और गड्ढों ने राहगीरों की परेशानी बढ़ा दी है। रामबाग, बाई का बाग, केपी कॉलेज और कोठापार्चा समेत कई इलाकों में सड़कें बदहाल हो गई हैं। स्थानीय लोगों ने घटिया निर्माण और कमीशनखोरी का आरोप लगाते हुए जिम्मेदार अफसरों व ठेकेदारों पर सवाल उठाए हैं।

चार दिनों की बारिश ने शहर में बनी नई सड़कों की पोल खोल दी। इनकी डामर और गिट्टियां बारिश में बह गईं। कुछ इलाकों में सड़क ही धंस गई। बारिश बंद होने पर सड़कों पर धूल–मिट्टी उड़ रही हैं। शहर की घनी आबादी वाले इलाके रामबाग में सुंदरम टावर चौराहा के पास बारिश की वजह से सड़क क्षतिग्रस्त हो गई। इसी तरह बाई का बाग से क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज चौराहे तक की सड़क उखड़ गई। यहां बड़े–बड़े गड्ढे अब खतरा बने हैं। केपी कॉलेज के सामने से होकर जाने वाली सड़क पूरी तरह से गड्ढायुक्त हो गई है। कोठापार्चा चौराहा और बहादुरगंज जाने वाली सड़क भी क्षतिग्रस्त हो गई है। यहां आते ही वाहनों की रफ्तार थम जाती हैं।

इसी तरह कानपुर जीटी रोड पर और जीटी रोड से सैनिक कॉलोनी, नेहरू पार्क की तरफ

गई है। स्थानीय निवासियों का आरोप है कि जिम्मेदार अफसरों और ठेकेदारों ने कमीशन की वजह से सड़क निर्माण व मरम्मतीकरण का कार्य घटिया तरीके से गया है।

तेलियरगंज चौराहा से महाराणा प्रताप चौराहा के बीच कई जगहों पर सड़क टूट गई है। इसी रोड पर म्योराबाद के पास कलश चौराहे पर बनाई गई नई सड़क बारिश के बाद चौराहे के हर तरफ सड़क खराब जाने वाली सड़क की स्थिति खराब हो गई है। सड़क क्षतिग्रस्त होने से जगह–जगह बारिश का पानी भर गया है। लोगों के आने–जाने में दिक्कत हो रही है। चौफटका के पास अनंत माधव मंदिर के पास भी सड़क खराब हो गई है।

इसके अलावा हाशिमपुर रोड, विवेकानंद मार्ग (हीवेट रोड), बैरहना चौराहा से नैनी की तरफ जाने वाली सड़क, चुंगी चौराहा, राजरूपपुर, नंदी चौराहे से करेली जाने वाली सड़क, दरियाबाद, पन्नालाल रोड और दारागंज समेत अन्य क्षेत्रों में सड़कों की हालत खस्ता हो गई है। मेडिकल कॉलेज चौराहे छोर पर आरओबी की शुरुआत में ही गड्ढे अब खतरनाक हो गए हैं। इनकी वजह से अब यहां वाहन रुक रहे हैं।

प्रयागराज विकास प्राधिकरण और लोक निर्माण विभाग को पत्र भेजकर सड़कों को ठीक कराने के लिए कहा है। यदि दोनों विभाग ने सड़कों की मरम्मत नहीं कराई तो नगर निगम इसे दुरुस्त कराएगा। –गणेश केसरवानी, महापौर

प्रयागराज में हादसा : 42 मजदूरों से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटने से तीन लोगों की मौत, 20 घायल, नौ की हालत नाजुक

प्रयागराज। नारीबारी के सूरवल साहनी स्थित पेट्रोल पंप के पास शुक्रवार सुबह 10 बजे 42 मजदूरों से भरी ट्रैक्टर–ट्रॉली डिवाइडर से टकराने के बाद पलट गई। हादसे में 17 वर्षीय किशोरी समेत तीन लोगों की मौत हो गई। नारीबारी के सूरवल साहनी स्थित पेट्रोल पंप के पास शुक्रवार सुबह 10 बजे 42 मजदूरों से भरी ट्रैक्टर–ट्रॉली डिवाइडर से टकराने के बाद पलट गई। हादसे में 17 वर्षीय किशोरी समेत तीन लोगों की मौत हो गई। चालक समेत 20 लोग घायल हैं। इसमें से नौ लोगों की हालत गंभीर है। उन्हें इलाज के लिए स्वरूपरानी नेहरू (एसआरएन) अस्पताल भेजा गया है। मृतकों में सोनरा गांव निवासी कमला देवी (50) पत्नी राममूरत आदिवासी और करीना (17) पुत्री भरतलाल, मनोरमा (19) पुत्री राजीव शामिल हैं। बताया गया कि प्रयागराज–रीवा मार्ग पर बाइक सवार को बचाने के दौरान हादसा हुआ। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया है। सुरवल साहनी निवासी अशोक सिंह पुत्र प्रताप सिंह सोनरा गांव से मजदूरों को ट्रैक्टर–ट्रॉली से धान की रोपाई के लिए लेकर जा रहे थे। सुबह ट्रैक्टर नारीबारी स्थित पेट्रोल पंप के पास पहुंचा। इस दौरान आगे चल रहे अंकित सिंह पुत्र राधेश्याम सिंह की बाइक सामने गड्ढा आने से अनियंत्रित हो गई। वह बाइक समेत सड़क पर गिर गए। बाइक सवार को बचाने में चालक ने ट्रैक्टर को अचानक मोड़ दिया।

इसके बाद अनियंत्रित ट्रैक्टर डिवाइडर से टकराकर पलट गया और ट्रॉली में बैठे 23 लोग उसके नीचे दब गए। जबकि अन्य मजदूर इधर–उधर छिटककर गिर गए।सूचना पर नारीबारी चौकी प्रभारी अमित कुमार टीम के साथ मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों व जेसीबी की मदद से ट्रैक्टर और ट्रॉली को सीधा कराया गया। हादसे में कमला देवी और 10वीं में पढ़ने वाली करीना की मौके पर ही मौत हो गई। मनोरमा पुत्री राजीव ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। वहीं, 20 मजदूरों में से नौ को एसआरएन रेफर किया गया है। 11 लोगों का पीएचसी में इलाज चल रहा है। वहीं, कुछ को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया।

हादसे में अशोक, राहुल, सिमरन, अशोका देवी, रोहित, सीता, रामलाल, आकाश, विनीता, लालजी, राधा समेत अन्य मजदूर जख्मी हुए हैं। सभी घायल सोनरा और बारा इलाके के रहने वाले हैं। उनका इलाज नारीबारी पीएचसी और निजी अस्पतालों में कराया जा रहा है। शंकरगढ़ के बड़गड़ी निवासी सुधा, बारा के सेहुड़रिया निवासी संदीप, मनैया निवासी आंचल पुत्री पृथ्वीपाल आदिवासी, सोनरा निवासी राजीव, दिलीप बिंद, संतोष, राकेश समेत नौ लोगों को एसआरएन रेफर किया गया है। मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। शनिवार को शवों का पोस्टमार्टम कराया जाएगा। पुलिस ने पोस्टमार्टम की प्रक्रिया पूरी कराने के बाद शव परिजनों को सौंपने की तैयारी शुरू कर दी है। हादसे में जान गंवाने वाली करीना (17) के पिता भरतलाल आदिवासी ने शंकरगढ़ थाने में तहरीर देकर ट्रैक्टर चालक अशोक सिंह के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। तहरीर में उन्होंने चालक पर लापरवाही से ट्रैक्टर चलाने का आरोप लगाया है।

धान की रोपाई के लिए मजदूर ट्रैक्टर–ट्रॉली से जा रहे थे। ट्रैक्टर के आगे चल रहा बाइक सवार अचानक अनियंत्रित होकर सड़क पर गिर गया। उसे बचाने के प्रयास में ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराकर पलट गया। हादसे में किशोरी समेत तीन लोगों की मौत हुई है। कई मजदूर घायल हैं। तहरीर के आधार पर मामले की जांच की जा रही है। –वेद व्यास मिश्रा, सहायक पुलिस आयुक्त, बारा

उपभोक्ता फोरम के निष्पादन आदेश को याचिका में चुनौती नहीं दे सकतेः हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि उपभोक्ता फोरम के निष्पादन आदेश को याचिका के जरिये चुनौती नहीं दी जा सकती। ऐसे आदेश के खिलाफ राज्य उपभोक्ता आयोग में अपील का विकल्प उपलब्ध है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि उपभोक्ता फोरम के निष्पादन आदेश को याचिका के जरिये चुनौती नहीं दी जा सकती। ऐसे आदेश के खिलाफ राज्य उपभोक्ता आयोग में अपील का विकल्प उपलब्ध है। यह आदेश न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव और न्यायमूर्ति सुधांशु चौहान की खंडपीठ ने भारतीय स्टेट बैंक की याचिका पर दिया। बैंक ने जिला उपभोक्ता विवाद निवारण फोरम, प्रयागराज के 12 सितंबर 2025 के आदेश को चुनौती दी थी। फोरम ने 74,200 रुपये की राशि ब्याज, हर्जाने और लागत समेत वसूलने के लिए वारंट जारी किया था। हाईकोर्ट ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का जिक्र कर कहा की कि जिला फोरम के आदेश के खिलाफ राज्य आयोग में अपील की जा सकती है। वहीं, धारा 17(1)(बी) में पुनरीक्षण का अधिकार केवल उपभोक्ता विवादों तक सीमित है, निष्पादन कार्यवाही तक नहीं।

हाईकोर्टः चिकित्सा प्रमाणपत्र की जांच के बाद 10वीं में छात्र की बहाली का आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कम हाजिरी के आधार पर 10वीं के छात्र को दोबारा प्रवेश नहीं देने वाले जवाहर नवोदय विद्यालय बुलंदशहर के आदेश को रद्द कर दिया। साथ ही प्रधानाचार्य को छात्र के चिकित्सा प्रमाणपत्र की जांच करने व उसमें सही पाने पर दोबारा प्रवेश देने का आदेश दिया है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कम हाजिरी के आधार पर 10वीं के छात्र को दोबारा प्रवेश नहीं देने वाले जवाहर नवोदय विद्यालय बुलंदशहर के आदेश को रद्द कर दिया। साथ ही प्रधानाचार्य को छात्र के चिकित्सा प्रमाणपत्र की जांच करने व उसमें सही पाने पर दोबारा प्रवेश देने का आदेश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति विनोद दिवाकर की एकल पीठ ने छात्र विजय कुमार की याचिका स्वीकार करते हुए दिया है। याची ने कोर्ट से नियमित छात्र के रूप में प्रवेश बहाल करने व कक्षा नौ की छूटी परीक्षाओं को विशेष या सप्लीमेंट्री परीक्षा के माध्यम से पूरा करने की अनुमति मांगी थी। याची ने दलील दी कि उसने कक्षा छह से आठ तक की पढ़ाई पूरी की है। उसका अनुशासन रिकॉर्ड भी अच्छा रहा। इसी दौरान वह गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित हो गया। नाक में गंभीर अवरोध, एलर्जिक राइनाइटिस, साइनसाइटिस और लगातार कब्ज जैसी समस्याओं के कारण उसे लंबे समय तक इलाज कराना पड़ा। एनसीआर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में लंबे समय तक भर्ती रहा। इसके अलावा नई दिल्ली के उसका एम्स में भी उपचार हुआ। उसके अभिभावक लगातार विद्यालय को बीमारी और अनुपस्थिति की जानकारी देते रहे। अवकाश प्रार्थना पत्र भी दिए गए। 20 फरवरी को विद्यालय लौटने पर उसे कम उपस्थिति के आधार पर प्रवेश नहीं दिया गया। उसकी उपस्थिति केवल सात फीसदी बताई गई थी। विद्यालय ने एनवीएस के नौ अक्तूबर 2025 के दिशानिर्देश का हवाला दिया, जिसके अनुसार 40 फीसदी से कम उपस्थिति को माफ नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने मामला प्रधानाचार्य को वापस भेजते हुए आदेश दिया कि संबंधित अस्पतालों से मेडिकल रिकॉर्ड की सत्यता और प्रमाणिकता की जांच की जाए। यदि मेडिकल रिकॉर्ड सही पाए जाते हैं और यह साबित होता है कि छात्र की अनुपस्थिति इलाज के कारण हुई थी तो चार सप्ताह के भीतर उसे कक्षा 10 के नियमित छात्र के रूप में दोबारा प्रवेश दिया जाए। साथ ही नियमानुसार उसे कक्षा नौ की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए विशेष या सप्लीमेंट्री परीक्षा में शामिल होने का अवसर दिया जाए।

1987 से वेतन की मांग वाली मदरसा शिक्षकों की याचिका खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आजमगढ़ के मदरसा जमीयतुल कुरैश जलालंधरी के शिक्षकों व कर्मचारियों की वर्ष 1987 से बकाया वेतन भुगतान की मांग वाली याचिका खारिज कर दी। न्यायमूर्ति मंजू रानी चौहान की एकल पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता अपनी नियुक्तियों की वैधता साबित करने में विफल रहे। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आजमगढ़ के मदरसा जमीयतुल कुरैश जलालंधरी के शिक्षकों व कर्मचारियों की वर्ष 1987 से बकाया वेतन भुगतान की मांग वाली याचिका खारिज कर दी। न्यायमूर्ति मंजू रानी चौहान की एकल पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता अपनी नियुक्तियों की वैधता साबित करने में विफल रहे।

संक्षिप्त

उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल का 22वां स्थापना दिवस कल

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल के 22वे स्थापना दिवस के अवसर पर 24 अगस्त ,सोमवार को राजधानी लखनऊ के राणा प्रताप मार्ग स्थित सिल्वेट होटल में व्यापारी शंखनाद सम्मेलन का आयोजन किया गया है संगठन के नगर अध्यक्ष हरजिंदर सिंह ने बताया व्यापारी शंखनाद सम्मेलन में व्यापारी अपने हितों की रक्षा एवं अधिकारों के लिए जोरदार तरीके से आवाज उठाते हुए शंखनाद करेंगे एवं आगामी विधानसभा चुनाव में व्यापारियों की भूमिका ,समाज में परिवर्तन लाने में व्यापारियों का योगदान, व्यापारियों की वर्तमान व्यापारिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति पर रणनीति बनाएंगे एवं व्यापारी के अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर शंखनाद करेंगे। संगठन के नगर महामंत्री राजीव शुक्ला, मोहित कपूर, संजय त्रिवेदी, संजीव जैन, आशीष गुप्ता ने विस्तार से जानकारी देते हुए बताया व्यापारी शंखनाद सम्मेलन में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मण्डल के प्रदेश अध्यक्ष संजय गुप्ता मौजूद रहेंगे तथा बड़ी संख्या में राजधानी के व्यापारी शंखनाद सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष अविनाश त्रिपाठी ,प्रदेश कोषाध्यक्ष मोहम्मद अफजल एवं प्रदेश मंत्री संदीप सिंह गौर ने बताया उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल के 22 वे स्थापना दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ सहित प्रदेश के विभिन्न जिलों में संगठन द्वारा व्यापारी सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं जिसमें व्यापारियों से संबंधित विषय उठाए जाएंगे।

सरोजनी नगर क्षेत्र में कांग्रेस पदाधिकारियों की बैठक संपन्न

लखनऊ (संवाददाता)। सरोजनी नगर' ब्लॉक में कांग्रेस पदाधिकारियों की बैठक पार्टी को मजबूत बनाने के उद्देश्य से सम्पन हुई आज लखनऊ के सरोजनी नगर ब्लॉक विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस के पदाधिकारियों ने संगठन सृजन अभियान के रूप मे जिला अध्यक्ष रुद्र दमन सिंह बब्लू भैया के गैस्ट हाउस आजाद गैस्ट हाउस में सम्पन हुई। बब्लू भईया के नेतृत्व में दरोगा खेडा सराजनी नगर के पदाधिकारी, मंडल कमेटी और बूथ बूथ अध्यक्षों के साथ संवाद हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि पूर्व सांसद राज्यसभा अमी यागनिक जी (ए. आई, सी, सी पर्यवेक्षक) पूर्व सांसद पी .एल, पुनिया, तथा काग्रेस सचिव उत्तर प्रदेश अतुल सिह, जिला अध्यक्ष रुद्रदमन सिंह बब्लु भइया तथा मंच का संचालन सामाजिक कार्यकर्ता जिला सचिव पास्टर फिरोज मसीह (राजन भईया ने सम्बोधित करते हुये आये हुये सभी कार्यकताओं से संगठन को मजबूत बनाने पर जोर देकर राहुल गांधी जी के हाथों को मजबूत करने का आह्वाहन किया।

अब स्मार्ट होगे उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूल

लखनऊ (संवाददाता)। अब उत्तर प्रदेश के सरकारी प्राइमरी और माध्यमिक स्कूलों की तस्वीर बदलने की तैयारी है। समग्र शिक्षा अभियान के तहत स्कूलों में नई सुविधाएं विकसित करने और नए विद्यालय बनाने के लिए 1871 करोड़ रुपये खर्च होंगे। केंद्र सरकार 1123 करोड़ और राज्य सरकार 748 करोड़ रुपये देगी। धनराशि एसएनए स्पर्श के तहत दी गई है। अतिरिक्त बजट मिलने की उम्मीद है। 972 राजकीय व अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक स्कूलों में आईसीटी लैब और स्मार्ट क्लास बनाई जाएंगी।31 जूनियर हाईस्कूल व कंपोजिट विद्यालयों को हाईस्कूल और चार राजकीय हाईस्कूलों को इंटरमीडिएट स्तर तक बढ़ाया जाएगा। चित्रकूट के दो व गाजियाबाद व ललितपुर का एक–एक स्कूल शामिल है।सीतापुर, संभल, मीरजापुर, चित्रकूट, हरदोई, श्रावस्ती व गोंडा समेत अन्य जिलों के स्कूलों में विस्तार होगा। प्रोजेक्ट प्रवीण के तहत राजकीय और एडेड स्कूलों में कौशल व एआई प्रशिक्षण दिया जाएगा। शिक्षकों को भी आधुनिक प्रशिक्षण मिलेगा। प्राइमरी स्कूलों में अतिरिक्त कक्ष, अन्य सुविधाएं और डिजिटल शिक्षा बढ़ाने पर जोर होगा। एससीईआरटी शिक्षकों को नवाचार आधारित शिक्षण की ट्रेनिंग देगा।

बारिश के बीच निकला चुप ताजिया का जुलूस

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी में मोहर्रम के अंतिम दिन शनिवार को चुप ताजिया निकाला गया। सुबह बारिश के बीच अकीदतमंद ताजिया को लेकर करीब 3 किमी तक पैदल चले। जुलूस की अगुआई कर रहे सफेद दुलदुल घोड़े को चूमा। चुप ताजिया के साथ 2 महीने 8 दिन बाद मोहर्रम समाप्त हो गया। जुलूस शुरू होने से पहले शिया धर्म गुरु मौलाना एजाज अतहर ने मजलिस पढ़ी। उसके बाद परंपरागत तरीके से निकाला गया जुलूस अकबरीगेट, नक्खास, बिल्लौचपुरा चौराहे से मुड़कर गिरधारी सिंह इंटर कॉलेज मंसूर नगर होता हुआ सआदतगंज स्थित रौजा–ए–काजमैन में संपन्न हो गया। जुलूस और मजलिस में अकीदत मंद शामिल हुए और नम आंखों से हजरत इमाम हुसैन को याद किया। ईराक स्थित कर्बला में यजीदी फौज की ओर से बेरहमी से शहीद किए गए पैगंबर मोहम्मद साहब के नवासे इमाम हुसैन और उनके 72 साथियों की याद में मोहर्रम मनाया जाता है। मौलाना एजाज अतहर ने जंग की तारीख बयान की। उन्होंने कहा कि इराक के कर्बला जैसी जंग दुनिया में दोबारा कभी नहीं हुई। यह ऐसी जंग थी, जिसमें महिलाएं, बीमार और 6 महीने के मासूम बच्चे भी शामिल हुए। पैगंबर मोहम्मद साहब के नवासे ने इस जंग को इंसानियत कि खातिर लड़ी थी। इसके साथ कर्बला से ये संदेश दिया कि अत्याचार करने वाला कितना भी शक्तिशाली हो उसके खिलाफ आवाज जरूर उठानी चाहिए। मौलाना एजाज ने बताया कि मोहर्रम में निकलने वाले सभी जुलूस खास होते हैं। लखनऊ इमामबाड़ा से निकाले गए अलविदाई चुप जुलूस मे भारी संख्या मे अकीदतमंद, अजादार शामिल हुए। मरसिया पढ़कर अकीदतमंदों ने इमाम हुसैन और उनके साथियों याद किया, पुरसा पेश किया।

लेखपालों ने सरोजनीनगर में थाना समाधान दिवस का किया बहिष्कार

लखनऊ (संवाददाता)। भ्रष्टाचार निवारण संगठन एंटी करप्शन टीम (एसीओ) द्वारा लेखपालों पर की जा रही गलत, फर्जी और दुर्भावनापूर्ण ट्रैप कार्रवाई के खिलाफ उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ ने मोर्चा खोल दिया है। 20 अगस्त को जनपद अयोध्या की तहसील सोहावल में लेखपाल श्री उत्कर्षदीप के खिलाफ एंटी करप्शन टीम ने ट्रैप कार्रवाई की। संघ का आरोप है कि यह कार्रवाई बिना जांच–पड़ताल के, षड्यंत्रपूर्वक की गई। वायरल वीडियो और सीसीटीवी फुटेज पर भी सवाल उठ रहे हैं।

जल निकासी एवं वर्षा जलभराव के स्थायी समाधान पर महापौर ने दिया जोर, संपूर्ण प्रयागराज का सर्वे कराने के निर्देश

प्रयागराज। नगर निगम प्रयागराज स्मार्ट सिटी मीटिंग हॉल में महापौर गणेश केसरवानी की अध्यक्षता में शहर की जल निकासी व्यवस्था, वर्षा जलभराव की समस्या, नाला–नालियों की सफाई, सीवर व्यवस्था एवं एसटीपी से संबंधित कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जलभराव की समस्या के स्थायी समाधान को लेकर विस्तृत चर्चा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए।

महापौर गणेश केसरवानी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जलभराव एवं जल निकासी से संबंधित शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर तत्काल निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और लापरवाही पाए जाने पर संबंधित अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। नागरिकों की शिकायतों का समयबद्ध एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया गया।

महापौर ने संपूर्ण प्रयागराज का सर्वे कराकर जलभराव वाले क्षेत्रों को चिन्हित करने तथा समस्या के स्थायी समाधान की कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रमुख नालों एवं जल निकासी मार्गों की नियमित सफाई कराने तथा

जिन स्थानों पर बार–बार जलभराव की समस्या उत्पन्न होती है, वहां प्राथमिकता के आधार पर स्थायी समाधान सुनिश्चित करने को कहा।

बैठक में सीवर एवं एसटीपी से जुड़े कार्यों की भी समीक्षा की गई। संबंधित विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर सीवर एवं जल निकासी से जुड़ी समस्याओं का शीघ्र निस्तारण कराने के निर्देश दिए गए। पीडीए एवं पीडब्ल्यूडी सहित अन्य संबंधित विभागों के साथ समन्वय बनाकर सड़क, नाला एवं जल निकासी से जुड़े कार्य प्रभावी ढंग से कराने पर भी जोर दिया गया।

महापौर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे स्वयं मौके पर जाकर समस्याओं का निरीक्षण करें और आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करें, ताकि नागरिकों को बेहतर एवं सुचारु मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

बैठक में जिलाधिकारी मनीष वर्मा, प्रयागराज, उपाध्यक्ष विकास प्राधिकरण ऋषि राज, नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज सीलम साईं तेजा, अपर नगर आयुक्त, शादाब असलम, सहायक नगर आयुक्त, मुख्य अभियंता लोक निर्माण विभाग, गंगा प्रदूषण इकाई, महाप्रबंधक जलकल सहित नगर निगम एवं अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

चवन्नी से रुपया बनाया, अखिलेश के बयान पर भड़कीं मायावती, बोलीं,पूरे जाट समाज से मांगें माफ

लखनऊ (संवाददाता)। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने शनिवार को समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी के बारे में की गई अमर्यादित टिप्पणी के लिए उन्हें पूरे जाट समाज से माफी मांगनी चाहिए। मायावती ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि अखिलेश यादव का यह कहना कि हमने इनको चवन्नी से रुपया बना दिया है पूरी तरह अमर्यादित, अशोभनीय और शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि अखिलेश को रालोद और उसके नेता के साथ–साथ पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के परिवार का अपमान करने के लिए पूरे जाट समाज से माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि सपा का चाल, चरित्र और चेहरा विरोधी दलों ही नहीं, बल्कि सहयोगी पार्टियों के प्रति भी संकीर्ण और जातिवादी रहा है। इसका राजनीतिक लाभ अक्सर भाजपा को मिला और सेक्युलर ताकतें कमजोर हुईं। मायावती ने कहा कि सपा के इसी रवैये के कारण 1993 में मुलायम सिंह यादव के साथ बना सपा–बसपा गठबंधन टूट गया और दो जून 1995 को कुख्यात लखनऊ स्टेट गेस्ट हाउस कांड हुआ। उन्होंने कहा कि 2019 में अखिलेश यादव के आश्वासन पर बसपा ने फिर गठबंधन किया, लेकिन चुनावी नतीजे अनुकूल न आने के बाद सपा के अहंकारी और स्वार्थी रवैये के कारण वह भी टूट गया। मायावती ने आरोप लगाया कि सपा गठबंधन में केवल अपना काम निकालना जानती है और काम निकलने के बाद दूसरी पार्टियों के खिलाफ अनाप–शनाप भाषा का इस्तेमाल करती है। मायावती ने सपा के पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) फॉर्मूले पर भी सवाल उठाते हुए आरोप

लगाया कि सपा प्रमुख राजनीतिक स्वार्थ के अनुसार पी का अर्थ कभी पिछड़ा वर्ग तो कभी पंडितों का हित बताते हैं। उन्होंने कहा कि सपा अपनी जाति को छोड़कर अन्य पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों और विशेषकर ब्राह्मण समाज की हितैषी नहीं रही। उन्होंने आरोप लगाया कि सपा की सरकारों में दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और सवर्ण समाज, खासकर ब्राह्मणों का शोषण हुआ और सकारात्मक कदम नहीं उठाए गए। मायावती ने कहा कि सपा सरकारों में गुंडों, बदमाशों, माफियाओं और अराजक तत्वों का ही भला हुआ तथा महिलाओं की सुरक्षा की स्थिति भी खराब थी। उन्होंने सर्वसमाज के लोगों से आगामी विधानसभा चुनाव में सपा को सत्ता में नहीं आने देने की अपील की।

ओपी राजभर ने अखिलेश यादव पर साधा निशाना, बोले, उनका मानसिक संतुलन खो गया

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव पर निशाना साधा है। ओम प्रकाश राजभर ने कहा, अखिलेश यादव डिप्रेशन में हैं, उनका मानसिक संतुलन खो गया है। वे खुद एनडीए के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन गए हैं, हो सकता है कि उन्होंने प्रधानमंत्री या अमित शाह से मुलाकात की हो। उन्होंने एनडीए का मालिक बनकर सहयोगी दलों को सीटें बांट दीं। एक दिन अखिलेश यादव ने 73 सीटें आरएलडी को और 39 सीटें भारतीय समाज पार्टी को दे दीं। अखिलेश ने संजय निषाद, अनुप्रिया पटेल, सहित चारों को ट्वीट किया है। एक ही दिन बाद 3 सीटों पर आ गए। ओम प्रकाश राजभर ने कहा, इसका मतलब है कि उनका मानसिक संतुलन खो गया है। ओम प्रकाश राजभर का नाम आते ही, जैसे उनको करंट लग जाता है। अखिलेश यादव की ओर से जयंत चौधरी पर निशाना साधे जाने पर ओम

प्रकाश राजभर ने कहा, अखिलेश यादव ने जाट समाज का अपमान किया है। जिस जाट समाज ने मुलायम सिंह को मुख्यमंत्री बनाया, आज उसी जाट समाज पर उनकी ओर से टिप्पणी की जा रही है। उनको अपने पिता के इतिहास को पढ़ना चाहिए। अखिलेश के पिता को नेता बनाने का काम चौधरी चरण सिंह ने किया था। अब उसी समाज पर उंगली उठा रहे हैं। इसका खामियाजा तो उनको भुगतना पड़ेगा। अखिलेश यादव किसको कब–क्या बोल दे रहे हैं, उनको खुद समझ नहीं आ रहा है।वंदे मातरम को लेकर ओम प्रकाश राजभर ने कहा, बेशक, विपक्ष के नेता इस समय सत्ता के इतने भूखे हैं कि वे जनता से वोट पाने के लिए हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं। जब जनता चुन कर भेजती है और शपथ संविधान की ले जाती है, लेकिन वंदे मातरम का विरोध करते हैं, तो कानून के खिलाफ चले जाते हैं। ऐसे में वे कानून न मानने वाले लोग हो जाते हैं। जब कानून नहीं मानेंगे तो फिर उनके खिलाफ कार्रवाई भी होगी। योग गुरु बाबा रामदेव को लेकर ओम प्रकाश राजभर ने कहा, जब अन्ना हजारे का आंदोलन चल रहा था, तो वे मंच पर बैठे थे। जब पुलिस ने लाठीचार्ज किया, तो वे सलवार–सूट पहनकर भाग गए। भागने के बाद, उन्होंने योग सिखाना शुरू किया और योग के जरिए दवाइयां बेचना शुरू कर दिया। तो, दवाइयां बेचने के बाद, वे अगली बार कहां विरोध–प्रदर्शन करेंगे? पिछली बार तो वे सलवार–सूट पहनकर भाग गए थेय इस बार वे क्या पहनेंगे? उत्तर प्रदेश में राजनीतिक नेताओं की सुरक्षा बढ़ाने पर ओम प्रकाश राजभर कहते हैं, मुझे भी सुरक्षा दी गई है। विपक्ष के सभी नेताओं और अन्य नेताओं को सुरक्षा दी गई है, जिनके लिए आईबी की ओर से खतरे की रिपोर्ट दी गई है।

सनातन की आड़ में व्यक्ति पूजा को बढ़ावा देना उचित नहीं : अंकित

लखनऊ (संवाददाता)। बिहार किन्नर कल्याण बोर्ड के सदस्य डॉ. राजन सिंह द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मंदिर बनवाए जाने की चर्चा के बीच उत्तर प्रदेश कांग्रेस सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अंकित सिंह यादव ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म आस्था, मर्यादा, त्याग और सेवा की महान परंपरा है, इसे किसी व्यक्ति विशेष की राजनीतिक व्यक्ति पूजा तक सीमित करना सनातन की मूल भावना के साथ न्याय नहीं है। अंकित सिंह यादव ने कहा कि भगवान राम, भगवान कृष्ण, महादेव, मां दुर्गा और सनातन के करोड़ों देवी–देवताओं की पूजा हमारी हजारों वर्ष पुरानी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि देवी–देवताओं के नाम पर राजनीतिक व्यक्तियों को भगवान के समान स्थापित करने की कोशिश न केवल आस्था की गरिमा को प्रभावित करती है, बल्कि इससे वास्तविक धार्मिक भावनाओं और सनातन परंपराओं का भी अवमूल्यन होता है।

सुखद पल की गाथा

छप्पय

कलियों का स्पर्श फूल में खुशबू भरना।
बोल रहा है मौन देख अधरों का हँसना।
सागर– नदी मिलाप नहीं होता आधा है।
अंतहीन यह बात सुखद पल की गाथा है।
शब्द–शब्द छल मुक्त हो रचकर प्रेम विधान को।
कहें समर्पण श्रेष्ठ है करे खत्म अभिमान को।।

दुख में भरकर हर्ष नहीं वे कुछ भी कहते।
होते हैं परिपक्व प्रेम जो निश्चल रहते।
वचन और अनुबंध दिलों की सीमा बनकर।
भरते मधुर सुगंध उसी को अपना कहकर।
साधक की यह साधना शब्दों का विस्तार है।
जहाँ मौन हँसकर कहे अंतस का उद्गार है।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

मुसलमान दुनिया के सामने नबी पाक के व्यवहार को पेश करें : मौलाना मुहम्मद हारून

लखनऊ (संवाददाता)। दारूल उलूम फरंगी महल में माह–ए–रबी उल अव्वल की मुनासिबत से आठवें जलसे "सीरतुन्नबी व सीरत–ए–सहाबा रजि और तहफ्फुजे शरीअत" का आयोजन किया गया। जलसे को खिताब करते हुए दारूल उलूम फरंगी महल के अध्यापक मौलाना मुहम्मद हारून निजामी ने कहा कि हुजूर पाक सल्ल0 तमाम इंसानों की रहबरी के लिए मुकम्मल नमूना है। दुनिया का हर शख्स हुजूर पाक सल्ल0 के सच्चे और अच्छे सहाबाक्राम रजि0 के एहसान का बदना नही अदा कर सकते। क्यों कि सहाबाक्राम ने अल्लाह तआला के पसंदीदा दीन–ए–इस्लाम को फैलाने में किसी किस्म की कसर नही छोड़ी। उन्होने ने कहा कि अल्लाह तआला की रजा इसी मे हैं कि जैसा अल्लाह ने हुक्म दिया है वैसा ही किया जाए, अपनी तरफ से उसमें कुछ कमी और ज्यादती न की जाए। सहाबाक्राम ने हुजूर पाक की जिन्दगी का हर पहलू हम तक पहंचा दिया। हमें अपनी आखिरत और दुनियावी फायदे के लिए उसको अपनाना चाहिए। उन्होने ने कहा कि आज जरूरत इस बात कि है कि सीरत–ए–नबवी स0 के तमाम पहलुओं का बारीकी से अध्ययन किया जाए और दुनिया के बसने वाले सारे इंसानों तक अल्लाह के रसूल का पैगाम पहुंचाया जाए।

अयोध्या में लेखपाल के फर्जी ट्रैप के विरोध में यूपी के 75 जिलों में लेखपालों की कलमबंद हड़ताल

लखनऊ (संवाददाता)। भ्रष्टाचार निवारण संगठन एंटी करप्शन टीम (एसीओ) द्वारा लेखपालों पर की जा रही गलत, फर्जी और दुर्भावनापूर्ण ट्रैप कार्रवाई के खिलाफ उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ ने मोर्चा खोल दिया है। 20 अगस्त को जनपद अयोध्या की तहसील सोहावल में लेखपाल श्री उत्कर्षदीप के खिलाफ एंटी करप्शन टीम ने ट्रैप कार्रवाई की। संघ का आरोप है कि यह कार्रवाई बिना जांच–पड़ताल के, षड्यंत्रपूर्वक की गई। वायरल वीडियो और सीसीटीवी फुटेज पर भी सवाल उठ रहे हैं। संघ ने कहा लेखपाल राजस्व विभाग का सबसे मेहनती, फ्रंट लाइन कर्मचारी है। गांव–गांव जाकर पैमाइश, अतिक्रमण, भूमि विवाद का काम करता है। कई बार अवैध काम न करने पर लोग रंजिश में झूठी शिकायत कर फंसा देते हैं। एसीओ बिना शिकायतकर्ता की पृष्ठभूमि और रंजिश की जांच किए ट्रैप कर देती है, जिससे ईमानदार लेखपालों में भय और असुरक्षा का माहौल है। इसी के विरोध में आज प्रदेश की सभी 351 तहसीलों में थाना दिवस का बहिष्कार कर धरना–प्रदर्शन किया गया। प्रदेशव्यापी एक दिवसीय धरना–प्रदर्शन की कड़ी में आज 22, अगस्त को उ०प्र० लेखपाल संघ उप शाखा, सरोजनीनगर, जनपद लखनऊ ने भी थाना समाधान दिवस का बहिष्कार किया। संघ के अध्यक्ष सुधीर कुमार शर्मा ने कहा कि उक्त प्रकरण में गंभीर अनियमितताएं हुई हैं। उन्होंने मांग की कि पूरे प्रकरण की निष्पक्ष एवं स्वतंत्र जांच कराई जाए। कार्रवाई में अपनाई गई प्रक्रिया एवं उपलब्ध साक्ष्यों की उच्चस्तरीय समीक्षा की जाए। यदि कार्रवाई तथ्यों के विपरीत पाई जाए तो दोषपूर्ण कार्रवाई को निरस्त कर संबंधित लेखपाल को राहत प्रदान की जाए। शिकायत तथ्यहीन या दुर्भावनापूर्ण पाए जाने पर एंटी करप्शन टीम के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाए।

उत्तर मध्य रेलवे

ई निविदा सूचना संख्या: NCR-M- PRYJ-WRP- 05-26 दिनांक: 20.08.2026

ई-टेण्डरिंग निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल यांत्रिक अभियंता, कोचिंग, प्रयागराज, उत्तर मध्य रेलवे द्वारा निम्न लिखित कार्य के लिए निर्धारित प्रपत्र में पर्याप्त अनुभव एवं वित्तीय क्षमतावान प्रतिष्ठित ठेकेदारों से ई-निविदाएं निविदा बंद होने की तिथि के 15:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है:-

कार्य का नाम: तीन वर्षों के लिए PRYJ कोचिंग डिपो में जल पुनर्चक्रण संयंत्र (Water Recycling Plant) और बहि:स्राव उपचार संयंत्र (ETP) का व्यापक रखरखाव और संचालन।

निविदा सिस्टम: सिंगल पैकेट सिस्टम	कार्य का अनुमानित लागत (रू. में): ₹ 3000000/-
बिड सिक्योरिटी: ₹ 60000/-	ई निविदा प्रपत्र का मूल्य: शून्य
कार्य की अवधि: 36 माह	निविदा बंद होने की तिथि: 11.09.2026

IREPS वेबसाइट पर प्रकाशन की तिथि: 20.08.2026

नोट:- (1) उपरोक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण (निविदा प्रपत्र सहित) IREPS वेबसाइट पर प्रकाशन की तिथि से वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होगा। (2) ऑनलाइन ई-निविदा केवल IREPS वेबसाइट पर निविदा बंद होने की तिथि के 15:00 बजे तक ऑनलाइन जमा की जा सकती है। (3) उपर्युक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। (4) न्यूनतम पात्रता मानदंड इस निविदा में लागू नहीं है। (5) किसी भी प्रकार की तकनीकि समस्या के समाधान के लिए IREPS की वेबसाइट की हेल्पलाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। 1938/26 (A)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

ई-प्रापण निविदा सूचना संख्या 26/39 दिनांक: 21.08.2026

ई-प्रापण निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से प्रधान मुख्य सामग्री प्रबन्धक, उ.म.रे., प्रयागराज (आई.एस.ओ.9001: 2015 प्रमाणित इकाई) निम्नलिखित मदों के लिये ई-प्रापण निविदायें आमंत्रित करते हैं।

क्र. सं.	निविदा संख्या	संक्षिप्त विवरण	मात्रा	निविदा खुलने की तिथि
1	38262327	टॉर्शन पिन (स्टील) फॉर ऑटोमैटिक ट्विस्ट लॉक	12889 नग	21.09.2026
2	30261751	नॉन एस्बेस्टस बेस्ड "के" टाईप हाई फ्रिक्शन कम्पोजिट ब्रेक ब्लॉक्स	138190 नग	22.09.2026
3	302620489	सेकेंडरी वेर्टिकल डम्पर फॉर एलएचबी एसी कोचेज	970 नग	22.10.2026
4	30262300	स्पीड सेंसर	376 नग	08.09.2026
5	10263110A	लॉन्ग लाइफ लोको साइड बफर असेंबली	360 नग	15.09.2026
6	20263470A	NI-CD बैटरी	207 नग	21.09.2026
7	38261896	पीजोमा किट फॉर केईंट टाईप डिस्ट्रीब्यूटर वॉल्व	2878 नग	15.09.2026
8	30262231	रियर कवर फॉर एक्सल बॉक्स	7772 नग	29.09.2026
9	38263232	कास्ट स्टील साईड फ्रेम	473 नग	07.10.2026

नोट: उपरोक्त सभी ई-प्रापण निविदाओं का पूरा विवरण IREPS वेबसाईट https://www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। निविदाओं में किसी भी बदलाव/शुद्धि-पत्र के लिए कृपया इस वेबसाईट को नियमित रूप से देखें। समाचार में कोई अलग से शुद्धि-पत्र/परिवर्तन प्रकाशित नहीं किया जाएगा। 1939/26 (MG)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

सम्पादकीय.....

हेल्थकेयर की चुनौतियां

यह विडंबना ही है कि देश में कभी भी सत्ताधीशों की प्राथमिकता सरकारी चिकित्सा–तंत्र को सक्षम बनाने की नहीं रही है। किसी भी चुनाव में स्वास्थ्य सुविधाओं को समृद्ध बनाना राजनीतिक दलों के एजेंडे में शामिल नहीं रहा। जनता भी हर आम परिवार से जुड़े सेहत के मुद्दे को जोर–शोर से उठाने में चूकती रही है। यही वजह है कि आज भी कुल मिलाकर देश के करोड़ों लोगों के लिये सस्ती व पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंच से बाहर हैं। अपने परिजनों के गंभीर रोगों के उपचार के लिये क्षमता से अधिक पैसा जुटाने के फेर में हजारों परिवार हर साल गरीबी की दलदल में धंस जाते हैं। यह गंभीर स्थिति सरकारी और प्राइवेट सेक्टर में हेल्थकेयर पर बनी संसदीय समिति की हालिया रिपोर्ट साफ तौर पर दर्शाती है। नेशनल स्टैटिस्टिकल ऑफिस के 2025 के सर्वे का हवाला देते हुए संसदीय समिति ने पाया है कि सरकारी सुविधाओं में अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीज का औसत खर्च 6,631 रुपये है, जबकि प्राइवेट में यह खर्च 50,508 रुपये है। निजी अस्पताल में होने वाला यह औसत खर्च सरकारी अस्पताल में होने वाले खर्च के मुकाबले सात गुना से भी अधिक है। जो चिकित्सा सुविधाओं में व्याप्त व्यापक विसंगतियों को ही दर्शाता है। यह आंकड़ा इसलिए भी अहम है कि निजी अस्पताल अब साठ फीसदी से ज्यादा मरीजों को अस्पताल में भर्ती करते हैं और 70 फीसदी आउट पेशेंट की देखभाल करते हैं। विडंबना यह है कि सरकारी अस्पतालों में पर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं का अभाव लगातार बना रहता है। वहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी मरीज महसूस करते हैं। सरकारी अस्पताल की सुविधाओं में बेड, उपकरण, दवाइयां और कुशल स्टाफ की कमी देखी जाती है। मरीज को भरोसा नहीं होता है कि उसे जरूरी इलाज सरकारी अस्पताल में मिल भी पायेगा। एक संकट यह भी है कि सरकारी अस्पतालों में मरीजों का दबाव बहुत ज्यादा होता है। उसके मुकाबले चिकित्सक उपलब्ध नहीं होते हैं। वहीं दूसरी ओर निजी अस्पतालों में चिकित्सकों की अच्छी आय और निजी प्रैक्टिस का सम्मोहन भी योग्य डाक्टरों को सरकारी अस्पतालों से विमुख बनाता है। यही वजह है कि पर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में मरीजों को निजी अस्पतालों में इलाज कराने के लिये बाध्य होना पड़ता है। दरअसल, उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचता, अब चाहे उनकी पैसा देने की क्षमता हो या न हो। लोगों की चिकित्सा इमरजेंसी की चिंता की वजह से स्वास्थ्य बीमा का बड़ा कारोबार देश में फल–फूल रहा है। जिसमें मरीजों को कम व बीमा कंपनियों और निजी अस्पतालों को ज्यादा मुनाफा हो रहा है। यही वजह है कि आज हेल्थकेयर सिस्टम में इलाज की सुविधा परिवार की आमदनी पर बहुत ज्यादा निर्भर हो जाती है। इसके चलते ही संसदीय पैनल की यह बात खास तौर पर चिंताजनक है कि अस्पताल में भर्ती होने का औसत बिल 37,858 है, जिसमें से मरीज अपनी जेब से लगभग 34,064 रुपये खर्च करते हैं। हालांकि, कुल बिल में अपनी जेब से होने वाला खर्च 2014 के 62.6 फीसदी से घटकर 2022–23 में 43.4 फीसदी हो गया है। इसके बावजूद 10–13 फीसदी की मेडिकल महंगाई का असर परिवारों के बजट पर अब भी पड़ रहा है। लेकिन सरकारी सुविधाओं में आ रही गिरावट को टाला न जा सकने वाला मान लेना भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। शासन–प्रशासन की प्राथमिकता सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाने की होनी चाहिए। निस्संदेह, संसदीय समिति की सिफारिशें सही दिशा की ओर संकेत देती हैं। इसमें छोटे और ग्रामीण अस्पतालों के लिये लक्षित सहायता, पारदर्शी इलाज पैकेज, बीमा दरों की समय–समय पर समीक्षा, मध्यम आय वाले वर्ग के लिये किफायती बीमा सुविधा, जेनेरिक दवाइयों तक मरीजों की व्यापक पहुंच बनाने तथा शहरों से परे मजबूत सार्वजनिक–निजी भागीदारी बढ़ाने की जरूरत पर बल दिया गया है। सही मायने में देश की स्वास्थ्य सेवा संबंधी महत्वाकांक्षाओं को केवल उसके चिकित्सा बाजार के आकार से नहीं मापा जाना चाहिए। साल 2030 तक 202.5 अरब डॉलर तक पहुंचने के अनुमानित क्षेत्र को यह भी साबित करना होगा कि देश में लाखों परिवारों को कर्ज की दलदल में धकेले बिना भी गुणवत्ता का इलाज उपलब्ध है।

जम्मू–कश्मीर पर अमेरिकी राजदूत का बयान

अमेरिका के भारत में राजदूत, साथ ही दक्षिण एवं मध्य एशिया के लिए विशेष दूत सर्जियो गोर ने बुधवार को जम्मू–कश्मीर का पहली बार दौरा किया। गोर ने जम्मू–कश्मीर को श्भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्साश्य बताया। जो हर तरीके से सही बयान है, लेकिन इस बयान को देने का वक्त और इसके पीछे अमेरिका की मंशा इन सब पर अब सवाल उठ रहे हैं। खासकर जिस तरह पाकिस्तान में इस बयान पर प्रतिक्रिया सामने आई है, वह जाहिर कर रही है कि मामला केवल इतना ही नहीं है। क्योंकि सर्जियो गोर ने कोई ऐसी बात नहीं कही, जो दुनिया नहीं जानती। लेकिन पाकिस्तान इस बात को हमेशा नकारता है और जम्मू–कश्मीर पर अपना दावा ठोंकता रहता है। इसी वजह से कई बार दोनों देशों के बीच तनाव भी बढ़े हैं। अतीत में कई बार अमेरिका पाकिस्तान के पलड़े की तरफ झुका दिखाई दिया है। हालांकि भारत ने तब भी बिना दबाव में आए यही दावा किया है कि जम्मू–कश्मीर उसका अभिन्न अंग है और पाकिस्तान के साथ विवाद को दोनों पक्ष ही मिलकर सुलझाएंगे, इसमें किसी तीसरे के लिए स्थान नहीं है। मगर डोनाल्ड ट्रंप बार–बार किसी न किसी तरह भारत और पाकिस्तान के बीच आ ही जाते हैं। पहलगाम हमलों के बाद हुए ऑपरेशन सिंदूर को रोकने का दावा डोनाल्ड ट्रंप ने सौ से ज्यादा बार किया है। पाकिस्तान ने भी बाकायदा ट्रंप को धन्यवाद ज्ञापित किया है। मगर भारत ने इस बात को नहीं माना कि उसने किसी के कहने पर ऑपरेशन सिंदूर बंद किया। खेद इस बात का है कि नरेन्द्र मोदी ने डोनाल्ड ट्रंप को दो टूक जवाब नहीं दिया कि आप ऐसे दावे न करें, यह सही नहीं है। अगर मोदी ऐसा करते तो शायद इस समय अमेरिकी राजदूत जम्मू–कश्मीर पर अपना प्रमाणपत्र नहीं देते और न सत्तारुढ़ भाजपा उसे लपक कर लेती। भाजपा ने गोर के इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर लिखा कि श्सर्जियो गोर ने जम्मू–कश्मीर को भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। यह एक स्पष्ट संदेश है, जिसे जमीन पर स्वीकार किया गया है और दुनिया ने भी मान्यता दी है। भाजपा इस उतावलेपन की जगह अगर केवल यही लिखती कि जो बात जगजाहिर है, वही सर्जियो गोर ने कही है, तो बेहतर रहता। बहरहाल, सर्जियो गोर के बयान के बाद भारत, अमेरिका और पाकिस्तान के

बीच अब कूटनीतिक हलचल तेज हो गई है। बुधवार से लेकर गुरुवार तक तीन अहम घटनाएं घटित हुईं, पहली सर्जियो गोर का बयान, दूसरी, पाकिस्तान का अमेरिकी राजनयिक को तलब करना और तीसरी दिल्ली में पाकिस्तान उच्चायुक्त के बाहर सुरक्षा ढांचे हटाया जाना। बता दें कि पाकिस्तान ने इस बयान को लेकर इस्लामाबाद में अमेरिकी प्रभारी राजदूत नताली बेकर को तलब किया और अपना विरोध दर्ज कराया। इसी बीच नयी दिल्ली में पाकिस्तान उच्चायुक्त के बाहर लगे सुरक्षा बैरिकेड, ट्रैफिक बोलार्ड और कतार नियंत्रित करने वाले ढांचे भी हटा दिए गए हैं। हालांकि करीब तीन दिन पहले पाकिस्तान में इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायुक्त के बाहर सुरक्षा बैरिकेड हटाए गए थे। तो दिल्ली की कार्रवाई को जैसे को तैसा कार्रवाई के रूप में देखा जा रहा है। अब आगे यह देखना होगा कि भारत और पाकिस्तान का विरोध केवल उच्चायुक्तों की सुरक्षा कम करने तक सीमित रहता है, या फिर यह तनाव और बढ़ेगा। भारत और पाकिस्तान के बीच पहलगाम के बाद संबंधों में कड़वाहट काफी बढ़ चुकी है। शाहबाज शरीफ से न देश संभल रहा है, न जनरल आसिम मुनीर पर उनका कोई बस है। डोनाल्ड ट्रंप आसिम मुनीर की कई बार तारीफ कर चुके हैं। ऐसे में इस समय अमेरिका पाकिस्तान को परेशान करने वाला बयान क्यों दे रहा है, यह सवाल भी बना हुआ है। ध्यान रहे कि अतीत में अमेरिकी अधिकारी कश्मीर मुद्दे पर अक्सर श्कश्मीरी लोगों की इच्छाओंश्च का उल्लेख करते रहे हैं। पाकिस्तान इस भाषा को अपने पक्ष के समर्थन के रूप में देखता रहा है, जबकि भारत तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को लगातार खारिज करता रहा है और कश्मीर को भारत–पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय मुद्दा बताता रहा है। डोनाल्ड ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में और उसके बाद भी कई मौकों पर भारत–पाकिस्तान के बीच कश्मीर मुद्दे पर मध्यस्थता की पेशकश की थी। ऐसे में गोर का जम्मू–कश्मीर को सीधे तौर पर श्भारत का महत्वपूर्ण हिस्साश्य बताना पाकिस्तान के लिए विशेष रूप से तो संवेदनशील है ही, भारत को भी इसमें बहुत खुश होने की जगह संभल कर विश्लेषण करने की जरूरत है। इस बयान के बाद अगर इस्लामाबाद में भी अमेरिका का यही रुख रहता है।

, तब तो यह माना जाए कि अमेरिका अपनी पुरानी नीति छोड़ रहा है, लेकिन अगर यहां एक बात और वहां दूसरी बात वह करेगा, तो फिर ऐसे बयानों को ज्यादा महत्व नहीं देना चाहिए। फिलहाल सर्जियो गोर ने एक बात यह भी कही है कि वह जम्मू–कश्मीर में यात्रा निर्देशों को लेकर थोड़ी ढील बरत सकता है। अभी तक पहलगाम के बाद जारी चेतावनी ही लागू हैं।

पीएम केयर्स फंड का ऑडिट

डॉ. ज्ञान पाठक

यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि मार्च 2020 में कोविड–19 संकट के दौरान अपनी सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद श्पीएम केयर्सश नाम का प्रचार–प्रसार वाला शब्द गढ़ा था, ताकि लोगों को बताया जा सके कि वह लोगों का ध्यान रखते हैं। इस शब्दावली को विस्तारित कर इसका नाम रखा गया श्प्राइम मिनिस्टर्स सिटिजन एसिस्टेंस एंड रिलीफ इन इमरजेंसी सिचुएशनश (आपातकालीन स्थिति में प्रधानमंत्री की नागरिक सहायता और राहत) रखा गया और इसे 27 मार्च 2020 को लॉन्च किया गया, ठीक 24 मार्च 2020 की शाम को लॉकडाउन की घोषणा के बाद।

विपक्ष का आरोप था कि इसे प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से अलग इसलिए बनाया गया था ताकि फंड की सार्वजनिक जांच से बचा जा सके। अब छह साल बाद हमें एहसास हो रहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मुसीबत में फंसे लोगों की मदद करने के बजाय दान का पैसा बैंकों में फिक्स्ड डिपॉजिट में रखना ज़्यादा पसंद था। इसका एक बड़ा उदाहरण तब सामने आया जब 2024–25 के लिए पीएम केयर्स फंड का ऑडिट स्टेटमेंट सार्वजनिक किया गया।

ऑडिट किए गए वित्तीय विवरण के अनुसार, इस वित्तीय वर्ष के दौरान पीएम केयर्स फंड को कुल 1279.9 करोड़ रुपये मिले, लेकिन उसने केवल 87.85 लाख रुपये खर्च किए। पीएम केयर्स फंड के पास कुल 8,542 करोड़ रुपये उपलब्ध थे, जिसमें से 7,847 करोड़ रुपये (लगभग 93 प्रतिशत) बैंकों में फिक्स्ड डिपॉजिट में रखे गए थे, जबकि 605 करोड़ रुपये सेविंग्स अकाउंट में रखे गए थे। यह स्पष्ट रूप से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्राथमिकता को दर्शाता है, जिन्होंने देश के लोगों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश की थी कि प्रधानमंत्री लोगों की परवाह करते हैं, लेकिन सच्चाई कुछ और ही लगती है। जब से पीएम केयर्स फंड की स्थापना हुई, यह मुख्य रूप से एक ट्रस्ट के तहत निजी फंड के रूप में स्थापित होने के कारण विवादों में रहा।

हालांकि इसमें राष्ट्रीय प्रतीक श्सारनाथ में अशोक का सिंह स्तंभश का इस्तेमाल किया गया था, जिसके आधार पर श्सत्यमेव जयतेश लिखा था और भारत के प्रधानमंत्री कार्यालय का नाम भी शामिल था।

ऐसा स्पष्ट रूप से कैग ऑडिट से बचने और आरटीआई अधिनियम के तहत जनता को जानकारी देने से रोकने के लिए किया गया था।

इसे एक सरकारी संस्था के तौर पर नहीं बनाया गया था, हालांकि भारत के प्रधानमंत्री के नाम पर दान मांगा और लिया गया था।

लघुकथा

पीढ़ी

"अरे वाह! आज तो तुम बहुत सुंदर लग रही हो।" ड्रेसिंग टेबल के सामने साड़ी की पिन लगाती हुई सुरभी से आकाश ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

"क्यों, चुड़ापे में मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो? अब तो मैं पचपन की और तुम अट्ठावन के हो।" सुरभी ने हँसते हुए कहा।

"नहीं सुरभी, तुम आज भी पैंतीस-चालीस से अधिक नहीं लगतीं, सच कह रहा हूँ।" आकाश ने गंभीरता से कहा।

"अरे हटो जी! मैं सास बन चुकी हूँ, दामाद भी है और एक-दो साल में बेटे की बहू भी आ जाएगी। आज हमारी अट्ठाईसवीं शादी की सालगिरह है और तुम भी मज़ाक कर रहे हो।" सुरभी ने शीशे में स्वयं को गौर से देखते हुए कहा।

अचानक एक चित्र उसकी आँखों के सामने तैर गया–

"माँ! माँ! आज मैं भाभी के हाथ का नहीं, आपके हाथ की आलू की कचौड़ी खाऊँगा. जब से भाभी आई हैं, आपके हाथ का खाना ही नहीं खाया।"

दस साल का चिट्टू अपनी सासू माँ से ज़िद कर रहा था।

"बिट्टू, मैं पचपन साल की हो गई हूँ। अब मेरे हाथ-पैर थक चुके हैं। फिर किसी दिन बना दूँगी। आज तबीयत भी ठीक नहीं है, आज भाभी के हाथ का खा लो।"

"किस सोच में डूब गई सुरभी?" आकाश ने उसे झकझोरते हुए पूछा।

"ओह! मैं सोच रही थी कि एक पीढ़ी पहले मेरी माँ और मेरी सासू माँ इस उम्र तक आते-आते बूढ़ी हो जाया करती थीं।"

"बताऊँ क्यों?" सुरभी की आँखें नम हो गईं। "सासू माँ के मुँह से ही सुना था–सोलह साल में शादी, सत्रह साल में गौना और फिर तीस साल की उम्र तक सात-आठ बच्चों को जन्म देना कोई आसान काम नहीं था। चूल्हे में फूँकनी से फूँकते-फूँकते आँखों में पड़ते धुएँ और बहते आँसुओं के बीच वे अपने भीतर का दर्द भी छिपाती रहती थीं। लगातार गर्भधारण, प्रसव और घरेलू कामों ने उनके शरीर को समय से पहले थका दिया था। कम उम्र में ही तरह-तरह की बीमारियाँ घेर लेती थीं. इलाज और जागरूकता के अभाव में कई महिलाएं गंभीर बीमारियों से जूझते हुए समय से पहले ही संसार छोड़ देती थीं।"

सुरभी ने अपनी गीली पलकों को पोंछते हुए कहा–

"शायद अशिक्षा, बाल विवाह, लगातार गर्भधारण और अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी ने एक पूरी पीढ़ी की औरतों को उनकी उम्र से पहले बूढ़ा कर दिया था।"

आकाश कुछ क्षण चुप रहा।

फिर मुस्कुराते हुए बोला, "और हमारी पीढ़ी?"

सुरभी ने शीशे में स्वयं को देखा और हल्के से मुस्कुराई।

"हमारी पीढ़ी ने कम-से-कम अपनी बेटियों को यह सिखा दिया है कि उम्र बढ़ना बुढ़ापा नहीं होता... अपने लिए जीना भी ज़रूरी है।"

दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा दिए।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

छात्रों ने कई मुद्दों पर बुनियादी

राजेश पांडेय

20 जून को जंतर–मंतर, नई दिल्ली से शुरू हुए छात्रों के आंदोलन की आवाज देश के कई राज्यों तक पहुंच चुकी है। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश,राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, बिहार, झारखंड, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश सहित कई राज्यों में विद्यार्थियों ने अपनी मांगों के समर्थन में धरना दिया और रैलियां निकाली हैं। कहीं बेरोजगारी, प्रतियोगी परीक्षाओं में कथित धांधली, स्कूलों में शिक्षकों और जरूरी सुविधाओं की कमी, तो कहीं होस्टल की ज्यादा फीस जैसे मुद्दों ने छात्रों को सड़क पर आने के लिए प्रेरित किया है। बदलाव और बेचैनी की ऊर्जा से भरी यह हलचल हमारे समाज, राजनीति और सरकारी तंत्र को वर्तमान दौर की चुनौतियों को समझने और उसके हिसाब से कदम उठाने का स्पष्ट संदेश देती है। इन आंदोलनों ने कुछ अहम पहलुओं को रेखांकित किया है। कुछ नए ट्रेंड उभर रहे हैं। छात्रों के आंदोलन राज्यों की राजधानियों और बड़े शहरों तक सीमित नहीं रहे। आमतौर पर किसी मुद्दे, मांग या विषय के पक्ष–विपक्ष में जनता के विभिन्न वर्ग बड़े शहरों में एकजुट होते आए हैं। अक्सर राजनीतिक दलों, छात्रों, मजदूर संघों और सामाजिक संगठनों द्वारा जनमत जगाने, विरोध जताने और लोगों को संगठित करने की मुहिम राजधानियों या बड़े शहरों में आकार लेती है। बहुत व्यापक आंदोलनों को छोड़ दें तो कई बार वह उन्हीं स्थानों तक सिमटकर रह जाती है। इस बार स्थिति अलग है। दिल्ली, भोपाल, रायपुर जैसी राजधानियों से उठी आवाज की अनुगूंज छोटे शहरों में सुनाई पड़ रही है। एक अन्य महत्वपूर्ण बदलाव आंदोलनों में हिस्सा लेने वाले लोगों के स्वरूप में हुआ है। कॉलेज छात्रों के साथ स्कूली छात्र आगे आए हैं। स्कूली छात्र सिर्फ हाईस्कूल तक सीमित नहीं हैं। कई जगह मिडिल स्कूल के छात्रों ने सीनियर साथियों के साथ मोर्चा संभाला है। लड़कियां भी पीछे नहीं हैं। वे सिर्फ दिल्ली या राजधानियों में ही नहीं छोटे शहरों तक में सड़क पर उतरी हैं। सवाल है, ऐसा क्यों हो रहा है? जाहिर है, वे मौजूदा स्थितियों में अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं हैं। उन्हें जिंदगी की दौड़ में पिछड़ने का खतरा नजर आता होगा। छोटे शहरों के छात्रों के जागरूक होने का मुख्य कारण उनकी मांग तो है ही पर सोशल मीडिया ने उनके लिए कैटलिस्ट या उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। मोबाइल के परदे का छोटा स्क्रीन उन्हें दिल्ली से लेकर सैनफ्रांसिस्को तक की हलचल की जानकारी देता है। वे सिर्फ रील बनाने, देखने या मनोरंजन तक सीमित नहीं होंगे। उन्हें साइंस, टेक्नालॉजी, इनोवेशन से जुड़ी गतिविधियों की खबरें मिल रही हैं। स्पेस साइंस के चमत्कार भी उनकी कल्पनाओं का हिस्सा बन रहे होंगे। वे देख रहे हैं कि कैसे अमेरिका के कोई मार्क जकरबर्ग फेसबुक, व्हाट्सएप जैसा टूल बनाते हैं तो कैसे ओपन एआई के सैम आल्टमैन चौट जीपीटी पेश कर रहे हैं। वे यह भी जानने लगे हैं किस तरह मेडिकल साइंस ने दिल और मस्तिष्क के रोगों सहित कई लाइलाज बीमारियों में राहत देने का रास्ता खोज लिया है। सूचना क्रांति का वर्तमान समय छात्रों सहित हर किसी को लोकतंत्र, आजादी और खुलेपन की अहमियत बताता है। वह उनके अंदर सिस्टम की जड़ता को तोड़ने और नई राह पर चलने की बेचैनी पैदा करता है। उन्हें कहीं लगता है कि वे असली बदलाव से बहुत दूर हैं। युवा महसूस कर रहे हैं कि मौजूदा व्यवस्था उन्हें सिर्फ प्रतियोगिता की अंतहीन होड़ में झोंक रही है। सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक व्यवस्था को नैतिकता, ईमानदारी, विश्वसनीयता और मानवीय मूल्यों के प्रसार का वाहक होना चाहिए। लेकिन इसका उल्टा हो रहा है। हम हर कहीं मूल्यों का क्षरण देखते हैं। राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचा अपने पुराने ढर्रे पर चल रहा है। ऐसे सिस्टम से युवाओं का मोहभंग और हताशा स्वाभाविक है। आधुनिक दौर में ऐसी व्यवस्था के खिलाफ ताकतवर स्वर उभरते रहे हैं। युवाओं और आम लोगों ने समय–समय पर सत्ता को झकझोरने के लिए अपना असंतोष जाहिर किया है। छात्रों के सत्याग्रह का जिक्र होता है तो मार्च, मई 1968 में फ्रांस के छात्र आंदोलन को हमेशा याद किया जाता है। उस वक्त पेरिस में छात्रों ने विश्वविद्यालयों, कॉलेजों में छात्रों की भीड़, शिक्षकों की कमी और अपर्याप्त साधनों के खिलाफ आवाज बुलंद की थी। देश की ट्रेड यूनियन भी छात्रों के साथ खड़ी हो गई थीं। आंदोलन दूसरे शहरों में फैल गया। मजदूर संघों के साथ आने से कारखानों, दफ्तरों में काम ठप पड़ गया था। फ्रांस के आंदोलन में तत्कालीन राष्ट्रपति चार्ल्स डिगाल की दस साल लंबी सत्ता का विरोध भी जुड़ा था। डिगाल का शासन अनुदारवादी था। उनकी तानाशाही और मनमानी के खिलाफ नौजवानों और मजदूर वर्ग में असंतोष पनप रहा था। डिगाल ने राजनीतिक सूझबूझ का परिचय दिया। उन्होंने नेशनल असेम्बली भंग कर दी। नए चुनाव कराए। देश में फैली अस्थिरता से परेशान मध्यम वर्ग ने डिगाल का समर्थन किया। उनकी पार्टी को संसद में फिर बहुमत मिल गया। 1969 में डिगाल ने संसद के स्वरूप में बदलाव के मुद्दे पर जनमत संग्रह कराया। लेकिन जनमतसंग्रह में हारने पर अप्रैल में उन्होंने राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया।

जुस्तजू ए हक़

कल के सब खुदाओं को
दफ़्तरे ए खुदाई की
कुर्सियों से उठवाओ

बूढ़ी सोच वालों से
ताज़ा सोच वालों के
मसश्अले न हल होंगे
मसश्अले न बढ़वाओ

जाओ ग़ाफ़िलो जाओ
एहतेजाज गाहों में
ज़ख़्म ज़ख़्म राहों में
बोलते घरानो में
इंक़ेलाब ख़ानों में
आज का खुदा होंगे

आज के खुदा तुमको
आज के ज़माने का
नुस्ख़ा ए अमल देंगे
तेवरियों के बल देंगे
अज़्म ओ हौसला देंगे
दर्से इरतेक़ा देंगे

जाओ ग़ाफ़िलो जाओ
एहतेजाज गाहों से
इंक़ेलाब ख़ानों से
आज के खुदा लाओ

आज के खुदा ला कर
दफ़्तरे खुदाई में
कुर्सियों पे बिठलाओ
और अपना हक़ पाओ।

अनवार अब्बास नक़वी

शहनाज गिल

मैं एटिट्यूड में रहती थी कि अगर मुझसे रिश्ता किया तो मैं लड़के के घरवालों एक बैंड बजा दूंगी

शबिग बॉस 13श में अपनी मासूमियत, चुलबुले अंदाज और सिद्धार्थ शुक्ला के साथ गहरी बॉन्डिंग की वजह से लोगों के दिलों को जीतने वाली शहनाज गिल इन दिनों अपनी नई पंजाबी फिल्म श्इश्कनामाश को लेकर चर्चा में हैं। इस वक्त फिल्म श्इश्कनामाश को लेकर चर्चा में हैं। हमेशा सुर्खियों में रहने वाली शहनाज गिल फैंस ओर पैपराजी की फेवरेट हैं। सोशल मीडिया पर शहनाज के तकरीबन 19 मिलियंस फॉलोवर्स हैं। इन दिनों वे खबरों में हैं अपनी नई पंजाबी फिल्म इश्कनामा से। इस मुलाकात में वे इश्क, शादी, फैंस और बेबाकी पर बिंदास होकर बात करती हैं। इश्क में धूम मचा दो आज प्यार को सिचुएशनशिप, होस्टिंग, बेंचिग, जॉम्बिंग जैसे टर्म्स से डिफाइन किया जाता है, जबकि एक जमाने में मोहब्बत, इश्क, उन्स जैसे लफ्ज हुआ करते थे, आपके लिए प्यार क्या है? इस सवाल पर शहनाज कहती हैं, श्इश्क को लेकर तो मुझे एक गाना याद आ रहा है। श्इश्क इश्क करना है कर ले, इश्क इश्क में जी ले मर ले, इश्क इश्क ना हो दोबारा, धूम मचा लेश मुझे लगता है इश्क धूम है, तो इश्क में धूम मचा दो। मगर मैं कभी मर–मिटने वाले जुनूनी प्यार में नहीं पड़ी। मुझे वैसा वाला इश्क नहीं हुआ।श श्लोग भले रूड कहें, मगर अपना मुंह बंद नहीं करूंगीश पंजाबी सिनेमा से अपने करियर की शुरुआत करने वाली शहनाज के लिए बिग बॉस 13 करियर का टर्निंग पॉइंट रहा। उसी के बाद शहनाज की मासूम, बेबाक और बिंदास इमेज बनी, जो लगातार आज भी जारी है। हमने उनसे जानना चाहा कि इस इमेज का उन्हें खामियाजा उठाना पड़ा है या फायदा हुआ है? इस पर उनका कहना है, श्नुकसान ज्यादा और फायदा कम होता है, मगर मुझे लगता है, दोनों बराबर ही होता है। कई लोग इस चीज को सपोर्ट करते हैं, तो कई लोग ये भी कहते हैं, श्क्या बोल रही है? क्यों बोल रही है, शी इज सो रूड,श मगर सॉरी लोगों के लिए मैं खुद को नहीं बदल सकती। मैं जो कुछ कहती हूं, मुंह पर कह देती हूं। मैं ऑनेस्ट हूं, मगर मैं किसी से हर्ट हूं, तो अपना हर्ट होना झट से बता देती हूं। उस वक्त मैं सामने वाले को हर्ट करने के चक्कर में अपने भीतर की सारी अच्छाई और कोमलता छुपा कर जाता देती हूं कि आपने मुझे दुख पहुंचाया है। ऐसा करके मुझे जवाब मिल जाता है कि सामने वाले ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया। सच कहूं, तो मैं भले अपनी लाइफ में सॉर्टेड हूं। लेकिन मुंह बंद नहीं करूंगी।श मैं ऑनेस्ट हूं, मगर मैं किसी से हर्ट हूं, तो अपना हर्ट होना झट से बता देती हूं। उस वक्त मैं सामने वाले को हर्ट करने के चक्कर में अपने भीतर की सारी अच्छाई और कोमलता छुपा कर जाता देती हूं कि आपने मुझे दुख पहुंचाया है। ऐसा करके मुझे जवाब मिल जाता है कि सामने वाले ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया। श्सच्चे फैंस को गले लगा लेती हूंश सोशल मीडिया हो या फैंस अथवा हो पैपराजी शहनाज गिल हर किसी की फेवरेट हैं। वे अपने फैंस और पैपराजी से बड़े प्रेम से पेश आती हैं। इस पर शहनाज कहती हैं, श्जो लोग मुझे जेनुइनली प्यार करते हैं, उनकी वाइब्स मुझे पता चल जाती हैं। जो मेरे सच्चे फैंस हैं, मैं उन्हें पहचान जाती हूं, तो जो वाकई मुझे प्यार करते हैं, मैं उन्हें पकड़ कर गले लगा लेती हूं।श अपने परिवार में किसी एक को दोस्त बनाना जरूरी है बहुत कम लोग जानते हैं कि ग्लैमर वर्ल्ड में आने से पहले शहनाज पर भी आम लड़कियों की तरह परिवार की तरफ से शादी का बहुत प्रेशर था। वे कहती हैं, श्मुझ पर काफी प्रेशर था शादी का। मैं जब भी शादियों में शामिल होती थी, तो मुझे रिश्तेदार पसंद कर लेते थे और रिश्ता भेज देते थे। मगर मैं उन रिश्तों को भगाने के लिए बहुत एटिट्यूड में रहती थी कि अगर मुझसे रिश्ता किया गया, तो मैं लड़के के घरवालों एक बैंड बजा दूंगी। इससे लड़के वाले भाग जाते थे।(हंसती हैं) मगर यहां मैं यही कहूंगी कि जब भी किसी लड़की पर शादी का दबाव बनाया जाए, तो उसे अपने दादा–दादी, मम्मी –पापा किसी से झिझकना नहीं चाहिए। अपनी बात बताना और रखना जरूरी है। आप इस बारे में बाहर बात करते हैं, अपने फ्रेंड्स से शेयर करते हैं, पर मैं कहूंगी कि अपने परिवार के अंदर दोस्त बनाओ। परिवार में कम से कम एक ऐसा दोस्त बनाओ, जो आपके इतना करीब हो कि उसे आप अपनी हर बात साझा कर सको। मेरे घर में मेरी मम्मी और दादी मेरे बेस्ट फ्रेंड हैं।श मैं जब भी शादियों में शामिल होती थी, तो मुझे रिश्तेदार पसंद कर लेते थे और रिश्ता भेज देते थे। मगर मैं उन रिश्तों को भगाने के लिए बहुत एटिट्यूड में रहती थी कि अगर मुझसे रिश्ता किया गया, तो मैं लड़के के घरवालों एक बैंड बजा दूंगी। इससे लड़के वाले भाग जाते थे। तब सोशल मीडिया से चार दिन की छुट्टी ले लेती हूं अपने आसपास की नेगेटिव एनर्जी से डील करने के टिप्स देते हुए वे कहती हैं, श्मैं पॉजिटिव और हाइड्रेटेड रहती हूं। अपना मेकअप करती हूं। अगर मुझे अपने बारे में कुछ ज्यादा ही नेगेटिव दिख रहा है, तो फिर मैं थोड़ी देर के लिए फोन स्विच ऑफ कर लेती हूं। अपने करीबियों को बुलाती हूं और उनके साथ थोड़ी मौज –मस्ती करती हूं। फिर मैं चार दिन तक सोशल मीडिया देखती तक नहीं। इससे मेर दिमाग उन चीजों से दूर हो जाता है। वैसे भी चार दिन बाद कोई भी खबर ठंडी पड़ जाती है। मगर इन चार दिनों में मैं जम कर मजे करती हूं।श

सोनम कपूर ने ब्लैक साड़ी में ढाया कहर, डायमंड नेकलेस से लेकर बालों तक...हर अंदाज पर फिदा हुए फैंस

एक्ट्रेस और फैशन आइकन सोनम कपूर बुधवार को मुंबई में एक लग्जरी ज्वेलरी शोकेस में शानदार अंदाज में नजर आईं। एक्ट्रेस एक शानदार ब्लैक साड़ी और उसके साथ खास ज्वेलरी पहने हुए सबका ध्यान अपनी ओर खींच रही थीं।इस इवेंट के लिए सोनम ने एक ब्लैक साड़ी चुनी, जिसके बॉर्डर और पल्लू पर बारीक मेटैलिक–गोल्ड का काम था। साड़ी पर सुनहरे और भूरे रंग के शेड्स में पारंपरिक कढ़ाई वाले मोटिफ्स भी बने थे। उन्होंने इसके साथ एक ब्लैक ब्लाउज पहना था, जिसकी स्लीव्स पर सुनहरी धारियों वाली डिटेलिंग थी। एक्ट्रेस ने अपने लुक को और खास बनाने के लिए डायमंड और जेमस्टोन जड़ा हुआ एक बड़ा नेकलेस, मैचिंग इयररिंग्स और शानदार अंगूठियां पहनी थीं। बालों के लिए उन्होंने उन्हें पीछे की तरफ एक स्लीक बन में बांधा और साथ में ड्यूई मेकअप लुक अपनाया। सोनम की बात करें तो, पिछले कुछ सालों में उन्होंने फैशन की दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। फैशन के साथ उनका रिश्ता उनकी बहन रिया कपूर से गहराई से जुड़ा रहा है, जिन्होंने अक्सर बड़े पब्लिक इवेंट्स के लिए उन्हें स्टाइल किया है। जो लोग नहीं जानते, उन्हें बता दें कि रिया एक फिल्म प्रोड्यूसर, फैशन डिजाइनर और स्टाइलिस्ट हैं। खासकर आयशा फिल्म सोनम के फैशन और फिल्मी सफर का एक अहम हिस्सा बन गई। 2010 में रिलीज हुई इस रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में उन्होंने मुख्य किरदार निभाया था– एक ऐसी युवा महिला जो फैशन और सोशल लाइफ में बहुत दिलचस्पी रखती थी। यह फिल्म बॉलीवुड में सोनम के शुरुआती दिनों में उनके बदलते फैशन इमेज से भी गहराई से जुड़ गई थी। अभिनय के मोर्चे पर, सोनम ने 2007 में संजय लीला भंसाली की फिल्म सांवरिया से अपना करियर शुरू किया। उन्होंने दिल्ली –6, आई हेट लव स्टोरीज, आयशा, रांझणा, भाग मिल्खा भाग, खूबसूरत, नीरजा, प्रेम रतन धन पायो, वीरे दी वेडिंग, संजू, एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा, द जोया फैक्टर और एके बनाम एके सहित कई फिल्मों में काम किया। नीरजा में उनके प्रदर्शन ने उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार दिलाया। व्यक्तिगत मोर्चे पर, सोनम ने मई 2018 में व्यवसायी आनंद आहूजा से शादी की। इस जोड़े ने अगस्त 2022 में अपने पहले बेटे, वायु का स्वागत किया। मार्च 2026 में, उन्होंने अपने दूसरे बेटे, रुद्रलोक का स्वागत किया।

रियलिटी शो बिग बॉस 20 का पहला प्रोमो मेकर्स ने जारी कर दिया है। इसमें सलमान खान बतौर होस्ट वापसी करते नजर आ रहे हैं। प्रोमो में सलमान ने करण–अर्जुन का जिक्र कर एक नया सस्पेंस खड़ा कर दिया है। यह नया सीजन 6 सितंबर से शुरू होने जा रहा है। इसका प्रसारण हर दिन रात 9 बजे जियोहॉटस्टार पर और रात 10रू30 बजे कलर्स टीवी पर किया जाएगा। इस बार फेस्टिव सीजन में बिग बॉस के सभी 6 भाषाओं वाले वर्जन एक साथ रिलीज किए जा रहे हैं। करण–अर्जुन का जिक्र, शाहरुख के आने की अटकलें जारी किए गए प्रोमो में सलमान खान एक घोड़े के साथ चलते हुए दिखाई दे रहे हैं। वीडियो के अंत में वे कहते हैं, जो करण–अर्जुन में हुआ था, वह अब बिग बॉस में दोबारा होगा. .. तथास्टू! सलमान के इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर कई तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। कयास लगाए जा रहे हैं कि ग्रैंड प्रीमियर पर शाहरुख खान भी सलमान के साथ नजर आ सकते हैं। वहीं कुछ रिपोर्ट्स में यह दावा भी किया जा रहा है कि इस सीजन में प्रतिभागी जोड़ियों में खेलेंगे या फिर शो में दो विजेता हो सकते हैं। 6 सितंबर से शुरू, सलमान बोले– प्रोमो में ही छिपा है हिंट शो के रिलीज शेड्यूल की पुष्टि करते हुए मेकर्स ने बताया कि यह 6 सितंबर से ऑन–एयर होगा।

टीवी के पॉपुलर शो सपने सुहाने लड़कपन के में चारू के किरदार से घर–घर में पहचान बनाने वाली एक्ट्रेस आंचल खुराना ने हाल ही में अपने करियर को लेकर बड़ा खुलासा किया है. एक्ट्रेस ने बताया कि इस शो के बाद उन्हें लगातार सिर्फ नेगेटिव रोल्स के ही ऑफर मिले, जिसकी वजह से उन्होंने कुछ समय के लिए एक्टिंग से ब्रेक भी ले लिया. श्सपने सुहाने लड़कपन केश फेम आंचल खुराना का खुलासा टैली मसाला दिए इंटरव्यू में आंचल खुराना ने अपने करियर को लेकर बात की. उनसे पूछा गया कि अपने कभी लीड रोल के लिए क्यों ट्राई नहीं किया? इसपर एक्ट्रेस ने कहा, मैंने काफी कोशिश की, लेकिन सपने सुहाने लड़कपन के के बाद मेरी इमेज नेगेटिव रोल्स वाली बन गई. मुझे लगातार विलेन के किरदारों के ऑफर मिलने लगे और मैंने वो रोल किए भी.आंचल खुराना ने कहा, श्इसके बाद मैंने छोटा–सा ब्रेक लिया, क्योंकि मैं अपने ऊपर लगा नेगेटिव रोल्स का टैग हटाना चाहती थी. टैग कुछ हद तक हटा भी, लेकिन फिर भी मुझे ज्यादातर नेगेटिव किरदारों के ही ऑफर आने लगे. सपने सुहाने लड़कपन के फेम एक्ट्रेस का खुलासा, शो के बाद सिर्फ नेगेटिव रोल ही मिले आंचल ने पंकज त्रिपाठी के साथ काम करने का अनुभव भी साझा किया. उन्होंने बताया, सरोजिनी में पंकज त्रिपाठी सर ने मेरे ससुर का किरदार निभाया था. वो उनका पहला डेली सोप था. शूटिंग के दौरान उन्होंने मजाक में कहा था, श्भाई, मैं डेली सोप नहीं करूंगा।

कौन से दूध में मिलेगा सबसे ज्यादा प्रोटीन! इन 7 मिल्क वैराइटी के बारे में जानते हैं आप?

❍ प्रोटीन सोर्स के लिए काफी सारे लोग डेयरी प्रोडक्ट पर निर्भर होते हैं। हर रोज दूध पीते हैं लेकिन क्या आप जानते हैं दूध की भी कई वैराइटी होती है। इन 7 तरह के दूध में से सबसे ज्यादा किसमे प्रोटीन की मात्रा होती है, जानें...

प्रोटीन सोर्स के लिए जैसे ही दूध का ख्याल आता है तो सबसे पहले गाय का दूध ही सबको याद आता है। एक गिलास दूध पीने से पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन मिल जाएगा। लेकिन प्रोटीन के लिए केवल यहीं दूध एकमात्र सोर्स नहीं है और भी कई तरह के दूध की वैराइटी है जिसमे गाय के दूध से ज्यादा या बराबर मात्रा में प्रोटीन मिलता है। यहीं नहीं इन दूध में प्लांट बेस्ड सोर्स से भी ज्यादा प्रोटीन होता है। चलिए जानें दूध की एक दो नहीं पूरी 7 वैराइटी और किसमे सबसे ज्यादा मात्रा में प्रोटीन होता है।

भेड़ का दूध

सुनकर अजीब लग रहा होगा लेकिन ये सच है, भेड़ के दूध में बहुत ज्यादा मात्रा में प्रोटीन होता है। 100 मिली दूध में करीब 5–6 ग्राम तक प्रोटीन मिल जाता है। यहीं नहीं प्रोटीन के साथ भेड़ के दूध में फैट और दूसरे न्यूट्रिएंट्स भी ज्यादा होते हैं और ये ज्यादा क्रीमी और रिच टेस्ट का होता है। इसीलिए भेड़ के दूध का इस्तेमाल योगर्ट और चीज बनाने में ज्यादा किया जाता है।

भैंस का दूध

भैंस का दूध इंडिया में कॉमन है और ये साधारण डेयरी में आराम से मिल जाता है। भैंस के दूध में फैट कंटेंट ज्यादा होता है और ये गाढ़ा, क्रीमी टेक्सचर का होता है। इसीलिए भैंस के दूध का इस्तेमाल ज्यादातर खोवा, पनीर, घी, दही बनाने में ज्यादा किया जाता है। वहीं 100 मिली दूध में करीब 3.7 से 4.5 ग्राम प्रोटीन होता है।

गाय का दूध

गाय के दूध को पीने के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। लेकिन प्रोटीन के मामले में ये काफी पीछे है और गाय की प्रजाति पर भी दूध में प्रोटीन की मात्रा निर्भर करती है। हालांकि 100 मिली दूध में 3.2 से 3.5 ग्राम प्रोटीन मिल जाता है और ये सबसे सरल प्रोटीन का सोर्स है जो आसानी से मिल जाता है।

बकरी का दूध

बकरी के दूध में काउ मिल्क जितना ही प्रोटीन होता है। मतलब तीन से साढ़े तीन ग्राम प्रोटीन सौ मिली में मिल जाता है। इसके साथ ही बकरी के दूध में कैल्शियम और दूसरे माइक्रोन्यूट्रिएंट्स भी होते हैं।

ऊंट का दूध

ऊंटनी का दूध वैसे तो आमतौर पर इंडिया में नहीं पिया जाता लेकिन नॉर्थ अफ्रीका, एशिया और मिडिल ईस्ट में कॉमन है और सदियों से पिया जा रहा। ऊंटनी के दूध की खासियत केवल प्रोटीन नहीं बल्कि दूसरे जरूरी न्यूट्रिएंट्स भी होते हैं। ये दूध भैंस के दूध से कम क्रीमी और हल्का सा नमकीन स्वाद वाला होता है। इसके दूध में 3–3.5 ग्राम प्रोटीन सौ मिली में होता है।

सोया मिल्क

जो लोग प्लांट बेस्ट प्रोटीन लेना पसंद करते हैं और सोया मिल्क को बेस्ट मानते हैं उन्हें बता दें कि सोया मिल्क के 100 मिली मात्रा में 3–4 ग्राम प्रोटीन ही होता है। जो किसी भी डेयरी मिल्क जितना ही है। हालांकि सोया मिल्क में सभी 9 अमीनो एसिड्स होते हैं जो इसे प्लांट बेस्ड प्रोटीन का अच्छा सोर्स बनाते हैं। जो लोग डेयरी प्रोडक्ट को अवॉएड करते हैं और प्रोटीन इनटेक पूरा करना चाहते हैं उनके लिए सोया मिल्क बाकी प्लांट बेस्ड मिल्क से अच्छा है।

बादाम मिल्क

बादाम का नाम सुनते ही हर किसी को लगता है कि ये सबसे ज्यादा हेल्दी होगा लेकिन प्रोटीन के मामले में ये सबसे पीछे है। और, अगर ये बादाम मिल्क पैकेट वाला है तो इसमे मात्र 0.5 से 1 ग्राम प्रोटीन ही 100 मिली में होता है।

बच्चों को मोबाइल से दूर रखना है? घर पर खेलें ये 5 मजेदार गेम्स

❍ बच्चों का खाली समय मोबाइल में निकलने के बजाय अगर परिवार के साथ मजेदार खेल खेलते हुए बीते तो इससे अच्छा क्या होगा। घर पर मौजूद कुछ आसान खेल बच्चों को बिजी रखने के साथ खूब हंसाने का काम भी कर सकते हैं।

आजकल बच्चों के हाथ में मोबाइल या टीवी का रिमोट बहुत आसानी से पहुंच जाता है। कुछ देर के लिए यह ठीक लगता है, लेकिन जब खाली समय का ज्यादातर हिस्सा स्क्रीन पर बीतने लगे तो माता–पिता की चिंता बढ़ना नॉर्मल है। ऐसे में बच्चों के साथ खुद खेलना एक अच्छा तरीका हो सकता है। इसके लिए आपको कोई महंगा खिलौना खरीदने की जरूरत भी नहीं है। घर में रखे कुछ पुराने और आसान खेल ही बच्चों के साथ अच्छा समय बिताने के लिए काफी हैं। इससे घर में हंसी–मजाक का माहौल बनता है और बच्चों के साथ आपका समय भी अच्छा बीतता है। अगर आप भी बच्चों के साथ घर पर कुछ मजेदार करना चाहते हैं, तो इन 6 खेलों को जरूर ट्राई कर सकते हैं।

1. लूडो

लूडो उन खेलों में से है जिसे बच्चे और बड़े दोनों आसानी से खेल लेते हैं। बच्चों को अपनी बारी का इंतजार करना, रूल्स का ध्यान रखना और हार–जीत को स्वीकार करना खेल–खेल में सिखाया जा सकता है। सबसे अच्छी बात यह है कि इसे खेलने के लिए किसी खास तैयारी की जरूरत भी नहीं होती।

2. कैरम

अगर बच्चे थोड़े बड़े हैं तो कैरम उनके साथ खेलने के लिए अच्छा खेल हो सकता है। इसमें बच्चों को निशाना लगाना और अपनी चाल सोचकर चलना होता है। हारने पर बच्चा उदास हो तो उसे समझाने का यह भी अच्छा मौका है कि खेल का मजा जीतने से ज्यादा जरूरी है।

3. चैस

चैस बच्चों के साथ बैठकर खेलने वाला एक अच्छा गेम है। इसमें हर चाल सोचकर चलनी होती है, इसलिए बच्चा ध्यान लगाकर खेलना सीख सकता है। शुरुआत में छोटे बच्चों को इसके नियम मुश्किल लग सकते हैं लेकिन जब बच्चा खुद चाल चलने लगेगा तो उसे इसमें ज्यादा मजा आने लगेगा।

4. स्क्रैबल

बच्चों को नए शब्द सीखने में रुचि पैदा करनी है तो शब्दों वाला यह खेल खेल सकते हैं। इसमें अलग–अलग अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाने होते हैं। माता–पिता बच्चों के साथ खेलते हुए नए शब्दों का मतलब भी बता सकते हैं। इससे खेल के साथ सीखने का मौका भी मिलता है।

5. अबेकस

अबेकस को सिर्फ पढ़ाई से जोड़कर ना देखें। इसे बच्चों के साथ एक गेम की तरह ट्राई करें। आप बच्चे को कुछ मोती गिनने के लिए कह सकते हैं और फिर उससे छोटी–छोटी गिनती की पहेलियां पूछ सकते हैं। इसे खेल की तरह रखने से बच्चा बिना किसी प्रेशर के नंबर्स सीख पाएगा।

ये 2 बातें ध्यान रखें!

बच्चों के साथ खेलते समय कोशिश करें कि आपका ध्यान मोबाइल या दूसरे कामों में ना हो। कुछ समय के लिए उनके साथ पूरी तरह खेल में शामिल हों।

हर बार बच्चे को जिताने की जरूरत नहीं है, लेकिन हारने पर उसे चिढ़ाने से भी बचें। उसे बताएं कि खेल में कभी जीत होती है और कभी हार।

पिगमेंटेशन हो या कालापन, चावल से बनी ये क्रीम करेगी फायदा! डॉ0 उपासना ने शेयर की रेमेडी

❍ क्या आपके चेहरा भी जगह जगह से काला हो गया है या फिर झाइयां होनी शुरू हो गई हैं? अगर हां, तो चावल से बनी ये क्रीम आपको जरूर ट्राई करनी चाहिए। आयुर्वेदिक एक्सपर्ट डॉ0 उपासना ने इस रेमेडी को शेयर किया है, साथ ही इसके फायदे भी बताए हैं।

समय के साथ चेहरे पर पिगमेंटेशन, अनइवेन स्किन टोन और झाइयों की समस्या हो जाती है। खासकर महिलाओं में ये प्रॉब्लम्स ज्यादा देखने को मिलती हैं, क्योंकि हार्मोनल बदलाव, टैनिंग और बढ़ती उम्र के साथ ही चेहरे का रंग आसमान नजर आने लगता है। ऐसे में कई महिलाएं बिना डॉक्टर की सलाह के कोई भी क्रीम या फार्मेसी में मिलने वाला ट्यूब लगा लेती हैं, जिससे उनकी स्किन लाल पड़ जाती है और दोबारा से ज्यादा काली हो जाती है। इसलिए ऐसे किसी भी क्रीम को लगाने से बचना चाहिए। हालांकि अगर आप घर पर ही कोई नुस्खा ट्राई करना चाहती हैं, तो डॉ उपासना वोहरा की बताई ये रेमेडी ट्राई कर सकती हैं। झाइयों, पिगमेंटेशन और त्वचा का रंग असमान होनाय जैसी स्किन प्रॉब्लम्स में ये काफी इफेक्टिव साबित हो सकती है।

झाइयों में चावल से बनी क्रीम कर सकती हैं फायदा

अगर आपके चेहरे की त्वचा का रंग असमान है, यानी कहीं काला है तो कहीं गोरा है, साथ ही पिगमेंटेशन और झाइयों की समस्या हैय तो ये चावल से बनी क्रीम एक बार आपको जरूर ट्राई चाहिए। डॉ उपासना कहती हैं कि इस क्रीम को लगाने से आपका चेहरे का रंग समान होता है और साथ ही चेहरा ज्यादा साफ और ब्राइट नजर आता है। इसे बनाने के लिए आपको चावल, बादाम और एलोवेरा जेल की जरूरत होती है।

स्टेप बाय स्टेप जानें क्रीम बनाने का तरीका

इस क्रीम को बनाने के लिए सबसे पहले आधा कटोरी चावल लें और उन्हें किसी बर्तन में भिगोकर रख दें। ध्यान रहे आपको बासमती चावल नहीं, मोटे राशन वाले चावल लेने हैं क्योंकि इनमें स्टार्च की मात्रा ज्यादा होती है। चावल के साथ ही 6–7 बादाम भी भिगोकर रख दें और दोनों चीजों को रात भर के लिए छोड़ दें।

अगले दिन इन्हें मिक्सर में पीसकर पतला सा लेप तैयार कर लें। अब एक छलनी की मदद से इस लेप को छान लें, एक पतला सा दूध जैसा पेस्ट निकालकर तैयार होगा। इस पेस्ट में आपको दो चम्मच एलोवेरा जेल अच्छी तरह मिक्स कर देना है। एक क्रीम बनकर तैयार हो जाएगा। इसे आप किसी साफ शीशी में भरकर रख सकते हैं। फ्रिज में रखने पर ये आराम से महीने भर तक चल जाता है।

कैसे इस्तेमाल करना है ये क्रीम?

ये क्रीम आप सुबह और शाम दोनों टाइम इस्तेमाल कर सकते हैं। सबसे पहले फेसवॉश की मदद से अपना चेहरा अच्छी तरह क्लीन करें, फिर थोड़ा सा क्रीम ले कर हल्के हाथों से अपने चेहरे पर दो मिनट के लिए मसाज करें। ये क्रीम चेहरे को अच्छे से मॉइश्चराइज कर देता है, इसलिए अलग से कोई दूसरी क्रीम या लोशन लगाने की जरूरत नहीं होती है।

जरूरी टिप – पैच टेस्ट जरूर करें। साथ ही अगर क्रीम से अजीब महक आनी शुरू हो गई है या ये आपको सूट नहीं हो रही है तो तुरंत इस्तेमाल बंद कर दें।

क्या होंगे इस क्रीम के फायदे?

ये क्रीम सबसे ज्यादा अनइवेन स्किन टोन को ठीक करने का काम करती है। वहीं अगर आपके माथे या मुंह के आसपास पिगमेंटेशन है या टैनिंग की वजह से रंग डाउन हो गया है, तो भी ये क्रीम फायदा कर सकती है। अगर आपकी झाइयां शुरुआती फेज में हैं, तो ये क्रीम फायदा कर सकती हैं। वरना डॉक्टर की सलाह लेना सबसे ज्यादा फायदेमंद माना जाता है।

खुशहाल शादीशुदा जिंदगी के लिए पति–पत्नी की उम्र में कितना फासला है जरूरी

❍ प्यार किसी भी उम्र में हो सकता है लेकिन भारतीय समाज में शादी की सही उम्र बताई जाती है। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर शादीशुदा जोड़ों के बीच कितनी उम्र का अंतर हो कि मैरिड लाइफ खुशहाल बीते, जानें जवाब...

कहते हैं जोड़ियां ऊपर से बनकर आती हैं, नीचे तो केवल उनका मिलन होता है। लेकिन आजकल शादी कंपैटिबिलटी, ट्रस्ट,लव, पार्टनरशिप, अंडरस्टैंडिंग का नाम है। ऐसे में खुद के लिए पार्टनर खोजते समय कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है। लेकिन एक सवाल जो कई बार आता है कि हैप्पी मैरिड लाइफ के लिए क्या पार्टनर की उम्र भी मायने रखती है। क्या पति–पत्नी के रिश्ते में कुछ सालों का फासला जरूरी होता है। आमतौर पर ट्रेडिशनल इंडियन शादियों में देखा जाता है कि लड़के की उम्र लड़की से 5–7 साल बड़ी हो तो लोग इसे सामान्य मानते हैं। लोगों का मानना है कि शादी के रिश्ते में अगर पति उम्र में बड़ा हो तो बेहतर होता है।

क्या कहती है रिसर्च

इस बारे में रिसर्च कहती है कि पार्टनर के बीच 5–7 साल की उम्र का फासला स्वीकार है। अगर उम्र में ज्यादा अंतर होगा तो शादीशुदा जिंदगी में समस्याएं आ सकती है क्योंकि दोनों के सोचने का तरीका काफी अलग होता है। स्टडी बताती हैं कि शादियां तभी चलती हैं जब दोनों पार्टनर की पसंद और शौक एक जैसे हों। जैसे हॉबी, मूवी, ट्रैवल, खाना–पीना ये शौक अगर एक जैसे होंगे तो कपल के बीच बॉन्डिंग बेहतर होती है। लेकिन रिश्ते में केवल इतनी ही समझदारी और आपसी तालमेल काफी नहीं होता और भी कई बातें हैप्पी मैरिड लाइफ के लिए जिम्मेदार होती है।

25 साल से छोटी उम्र के लड़कों से शादी करना सही या गलत

वहीं रिसर्च ये भी कहती है कि शादी के लिए लड़कों की उम्र 25 साल से कम ठीक नहीं क्योंकि इस उम्र तक के लड़कों में जिम्मेदारियों को संभालने की कमी होती है। वहीं लड़कियां ज्यादा जल्दी मेच्योर हो जाती है और 21 साल की लड़की भी पार्टनर के साथ पूरी तरह से शादी की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए तैयार होती है।

तो कितना उम्र का फासला सही है

वैसे तो प्यार उम्र देखकर नहीं होता लेकिन स्टडी के मुताबिक हैप्पी और लंबे समय तक चलने वाली मैरिज में एज गैप जीरो से तीन साल तक का है। वहीं जिन कपल में उम्र का अंतर ज्यादा था करीब 6 से 10 साल का तो वहां पर शादीशुदा रिश्ते में संतुष्टि कम थी। जिस रिश्ते में जीरो से तीन साल का गैप था और पुरुष की उम्र ज्यादा थी उनमे ज्यादा संतुष्टि थी। वहीं सात साल उम्र का फासले वाले कपल्स में ज्यादा दूरी देखने को मिली। इसका कारण मिसमैच लाइफ का स्टेज था। भले ही कम उम्र की बीवी के साथ कुछ समय सब सही चले लेकिन जल्दी ही उनमे असंतुष्टि का भाव आ जाता है।

चावल बच गए हैं? 10 मिनट में बनाएं ये कुरकुरा और टेस्टी स्नैक, बच्चे खूब पसंद करेंगे!

❍ रात के चावल अक्सर बच जाते हैं। ऐसे में उन्हें फेंकने या दोबारा गर्म कर के खाने के बजाए आप ये कुरकुरा सा स्नैक बनाकर तैयार कर सकती हैं। बहुत ही ज्यादा टेस्टी स्नैक बनता है, जिसे बच्चों से ले कर बड़े तक, सभी शौक से खाने वाले हैं।

रात के चावल अक्सर बच जाते हैं। इन बचे हुई चावलों का आप क्या करती हैं? क्योंकि इन्हें दोबारा गर्म कर के खाने का तो बिल्कुल मन नहीं करता। ऐसे में बेस्ट रहता है कि इनसे कोई टेस्टी सी रेसिपी बना ली जाए। कुछ ऐसा जो खाने में काफी टेस्टी भी हो और फटाफट बन भी जाए। क्यों ना आप इनकी क्रिस्पी सी बाइट्स बनाकर तैयार कर लें? बाहर का खाने की क्रेविंग भी दूर हो जाएगी और बचे हुए चावल बेकार भी नहीं जाएंगे। बच्चे अक्सर कुछ बढ़िया खाने की जिद करते रहते हैं। खासकर शाम होते ही उन्हें स्नैक्स में कुछ चाहिए ही रहता है। ऐसे में ये बचे हुए चावलों से बनी क्रिस्पी बाइट्स उन्हें बहुत पसंद आने वाली हैं। एक बार आप इन्हें बना लेंगी तो बार–बार डिमांड आनी पक्का है। तो चलिए रेसिपी शुरू करते हैं।

क्रिस्पी बाइट्स बनाने के लिए सामग्री

लेफ्टओवर राइस से क्रिस्पी और टेस्टी बाइट्स बनाने के लिए आपको जिन सामग्रियों की जरूरत होगी वो हैं– बचे हुए चावल (1 कप), उबले हुए आलू (चावल के बराबर मात्रा रखें), जीरा (1 चम्मच), स्वादानुसार नमक, चिली फ्लेक्स (मोटी कुटी हुई लाल मिर्च), कटी हुई हरी मिर्च, बारीक कटा हुआ करी पत्ता, ताजा हरा धनिया पत्ता, ऑरिगेनो (1 चम्मच) और तलने के लिए तेल।

बचे हुए चावल से बनाएं ये मजेदार कुरकुरा स्नैक

स्टेप 1– रात के बचे हुए चावल रखें हैं तो आप फटाफट से ये कुरकुरा सा स्नैक बनाकर तैयार कर सकती हैं।

होटल रूम में बेड के नीचे बोतल क्यों डाल रहे लोग? सेफ्टी से जुड़ा ये हैक जरूर जान लें!

❍ सोशल मीडिया पर होटल सेफ्टी से जुड़ा एक हैक काफी वायरल हो रहा है। इस हैक में लोग होटल रूम में बेड के नीचे बोतल डाल रहे हैं। कारण बड़ा दिलचस्प है और सेफ्टी के लिहाज से आपको भी जरूर पता होना चाहिए।

होटल रूम बुक करना आजकल आम है। कामकाज के सिलसिले से कहीं बाहर जाना पड़े या फिर वेकेशन पर निकले हों, होटल रूम आपने भी कभी ना कभी बुक किया ही होगा। वैसे तो एक अच्छा होटल बुक किया जाए, तो सेफ्टी का चांस उतना ज्यादा बढ़ जाता है। लेकिन फिर भी समझदारी इसी में है कि होटल रूम या किसी भी अनजानी जगह ठहरने से पहले कुछ चीजें चेक कर ली जाएं। आमतौर पर कैमरा, खिड़की दरवाजों या आसपास के माहौल को चेक कर लेते हैंय लेकिन अंदर कोई रिस्क है या नहीं ये बहुत लोगों से मिस हो जाता है। इसी से जुड़ा एक हैक सोशल मीडिया पर काफी पॉपुलर हो रहा है, जो बड़ा दिलचस्प है। होटल रूम बुक करने से पहले आप भी इसे ट्राई कर सकते हैं। इस हैक के मुताबिक अगर आप किसी भी होटल रूम में ठहर रहे हों, तो पानी की बोतल को बेड के नीचे फेंककर जरूर चेक करें। इसका मकसद ये जानना है कि कहीं बेड के नीचे कोई संदिग्ध वस्तु या व्यक्ति तो मौजूद नहीं है।

संक्षिप्त

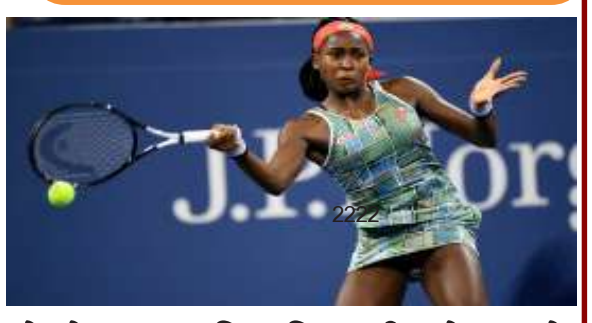

कोको गश्वफ सिनसिनाटी ओपन के सेमीफाइनल में, सारा बेजलेक से होगी फाइनल में पहुंचने की जंग

सिनसिनाटी,एजेंसी। कोको गॉफ ने 10वीं वरीयता प्राप्त मार्टा कोस्त्युक को 6–2, 6–2 से हराकर सिनसिनाटी ओपन के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। वह ओपन एरा में 2321 साल की उम्र से पहले कई सिनसिनाटी ओपन सेमीफाइनल में पहुंचने वाली च2ौथी खिलाड़ी भी बन गई हैं। कोको गॉफ ने मार्टा कोस्त्युक को आसानी से हरा दिया। मुकाबले के दौरान गॉफ का दबदबा देखने को मिला। उन्होंने अलग–अलग तरह के शॉट चुने और टूर पर किसी से भी बेहतर कोर्ट कवर किया। जीत के बाद गॉफ ने कहा, श्यह कमाल है, मुझे लगता है कि हम सब बहुत अच्छा कर रहे हैं। उम्मीद है, हम डबल टाइटल जीत सकते हैं। ऐसा होने के लिए और मैच खेलने होंगे। हम पक्का एक–दूसरे का समर्थन करते हैं। सेमीफाइनल में कोको गॉफ का सामना सारा बेजलेक से होगा। बेजलेक ने एक सेट से पिछड़ने के बाद और आखिर में तीसरे सेट के टाईब्रेक में 4–2 से पिछड़ने के बाद पूर्व ऑस्ट्रेलियन ओपन चौंपियन मैडिसन कीज को 3–6, 6–4, 7–6 (5) से हराकर सेमीफाइनल में पहुंची हैं। बेजलेक ने फरवरी में अबू धाबी ओपन में क्वालिफायर के तौर पर अपना पहला डब्ल्यूटीए टूर खिताब जीता था। बेजलेक की अब तक की शानदार जीत में उनकी हमवतन कैरोलिन प्लिसकोवा और बारबोरा क्रेजसिकोवा भी शामिल हैं, जो सबालेंका और कीज के साथ पहले डब्ल्यूटीए 1000 चैंपियन बन चुकी हैं। 2009 के बाद से, बेजलेक डब्ल्यूटीए 1000 सेमीफाइनल तक पहुंचने के रास्ते में ऐसी चार खिलाड़ियों को हराने वाली सिर्फ दूसरी खिलाड़ी हैं, इससे पहले प्लिसकोवा ने आठ साल पहले मैड्रिड में ऐसा किया था। सेमीफाइनल तक पहुंचने के रास्ते में बेजलेक ने पहले नंबर 1 कैरोलिन प्लिसकोवा, मौजूदा नंबर 1 अरिना सबालेंका, मैडिसन कीज और बारबोरा क्रेजसिकोवा जैसी दो और ग्रैंडस्लैम चैंपियन को हराया है। बेजलेक और गॉफ के बीच फाइनल में जगह बनाने के लिए रोमांचक मुकाबला होने की उम्मीद है। पुरुष एकल के दूसरे सेमीफाइनल में इटली के फ्लेवियो कोबोली का मुकाबला फ्रांस के आर्थर फिल्स से होगा। टियाफो ने इटली लोरेंजो मुसेटी को 7–6 (2), 7–5 से और नाकाशीमा ने हमवतन अमेरिकी खिलाड़ी टेलर फ्रिट्ज को 7–6, 4–6, 6–3 से हराया। अंतिम चार में यह दोनों खिलाड़ी आमने–सामने होंगे। यह 2010 के बाद पहला अवसर है जबकि अमेरिका के दो खिलाड़ी पुरुष एकल के सेमीफाइनल में पहुंचे हैं।

मिचेल स्टार्क ने किस मामले में स्टेन को पीछे छोड़ा? 19वीं बार टेस्ट में लिए पांच से अधिक विकेट

मैके,एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक विकेटों के मामले में दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज डेल स्टेन को पीछे दिया है। स्टार्क अब स्टेन को पीछे छोड़ते हुए टेस्ट क्रिकेट इतिहास के 10वें सफलतम गेंदबाज बन गए हैं। स्टार्क ने शनिवार से साउथ मैके में ऑस्ट्रेलिया और बांग्लादेश के बीच शुरू हुए टेस्ट मैच के पहले दिन यह उपलब्धि हासिल की। साउथ मैके में ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। स्टार्क ने अपनी आग उगलती गेंदबाजी से बांग्लादेश के शीर्ष क्रम बल्लेबाजी को तहस नहस कर दिया। स्टार्क ने अपनी शुरुआती 22 गेंदों पर ही पांच विकेट ले डाले। स्टार्क ने 10 ओवर की गेंदबाजी में छह मेडन फेंकते हुए मात्र 12 रन देकर छह विकेट लिए। इस दौरान पांचवां विकेट लेते ही उन्होंने डेल स्टेन को पीछे छोड़ दिया। 36 साल के स्टार्क के अब 107 टेस्ट मैचों की 205 पारियों में 441 विकेट हो चुके हैं। स्टार्क टेस्ट मैच की एक पारी में 19 बार पांच या उससे अधिक विकेट ले चुके हैं, जबकि एक मैच में 10 या उससे अधिक विकेट तीन बार ले चुके हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 58 रन देकर सात विकेट है। स्टार्क से आगे अब वेस्टइंडीज के दिग्गज तेज गेंदबाज कॉर्टनी वॉल्श हैं। वॉल्श के नाम 132 टेस्ट में 519 विकेट हैं। देखना होगा कि स्टार्क इस रिकॉर्ड को तोड़ पाते हैं, या नहीं। डेल स्टेन ने 2004 से 2019 के बीच 93 टेस्ट मैचों में 439 विकेट लिए थे। स्टेन अब टेस्ट के सफलतम गेंदबाजों की सूची में 11वें नंबर पर चले गए हैं। टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट श्रीलंका के ऑफ स्पिनर मुथैया मुरलीधरन के नाम है। मुरलीधरन ने 1992 से 2010 के बीच 133 टेस्ट में 800 विकेट लिए हैं। दूसरे स्थान पर ऑस्ट्रेलिया के शेन वॉर्न हैं। वॉर्न ने 1992 से 2007 के बीच 145 टेस्ट में 708 विकेट लिए थे। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन 2003 से 2024 के बीच 188 टेस्ट में 704 विकेट लेकर तीसरे स्थान पर हैं। मैच की बात करें तो ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला लिया और बांग्लादेश की पहली पारी शुरुआती दिन ही महज 64 रन पर ढेर कर दी। यह बांग्लादेश का टेस्ट की किसी पारी में चौथा न्यूनतम टोटल है। बांग्लादेश की बल्लेबाजी इस कदर खराब रही कि चार बल्लेबाज खाता भी नहीं खोल सके। स्टार्क ने इस तरह सिर्फ अपने शुरुआती 22 गेंदों पर ही पांच विकेट ले डाले और चंद मिनटों में बांग्लादेश की पारी लड़खड़ा दी। बांग्लादेश की बल्लेबाजी इस कदर खराब रही कि दूसरे ही सत्र में टीम की पहली पारी समाप्त हो गई।

गिल को कुलदीप पर भरोसा नहीं, इस पूर्व भारतीय बल्लेबाज ने कप्तान को घेरा, जानें क्यों की आलोचना

नई दिल्ली,एजेंसी। श्रीलंका के खिलाफ गॉल में खेले गए पहले टेस्ट मैच में भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कुलदीप यादव को लंबा स्पेल नहीं दिया। अब इसे लेकर पूर्व भारतीय क्रिकेटर मोहम्मद कैफ ने क2ड़ी नाराजगी जताई है। कैफ का मानना है कि इससे यह साफ झलकता है कि कप्तान का इस कलाई के स्पिनर पर पूरा भरोसा नहीं है, जबकि कुलदीप भारतीय क्रिकेट के लिए एक अनोखा उपहार हैं। गॉल की स्पिन अनुकूल पिच पर जहां मानव सुथार ने 10 विकेट लिए और रवींद्र जडेजा ने भी बहुमूल्य विकेट चटकाए, वहीं कुलदीप यादव को काफी कम गेंदबाजी का मौका मिला। सुथार और जडेजा ने दोनों पारियों में लगभग 44–44 ओवर फेंके, वहीं कुलदीप को पूरे मैच में सिर्फ 25 ओवर ही मिल पाए। हालांकि भारत ने यह मुकाबला 165 रनों से जीत लिया। दोनों टीमों के बीच अब रविवार से सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच खेला जाना है। अपने यूट्यूब चौनल पर बात करते हुए मोहम्मद कैफ ने कहा, कुलदीप के इस्तेमाल के तरीके से यह साफ है कि शुभमन गिल को कुलदीप यादव पर पूरा भरोसा नहीं है। मेरे नजरिए से देखा जाए तो कुलदीप जैसा अनूठा गेंदबाज आपको बार–बार नहीं मिलता। ऐसे गेंदबाज इतिहास में सिर्फ एक या दो बार ही आते हैं। हमें भविष्य में जडेजा का विकल्प मिल सकता है, जैसे हमारे पास सुथार हैं। फिर हमारे पास अश्विन के बाद वाशिंगटन सुंदर आए, लेकिन कुलदीप एक अनोखा उपहार हैं।

कैफ ने इस बात पर भी जोर दिया कि कलाई के स्पिनरों को लय हासिल करने और अपनी गलतियों में सुधार करने के लिए लंबे स्पेल की जरूरत होती है। उन्होंने कहा, जब आप किसी गेंदबाज को स्पेल देते हैं, खासकर कलाई के स्पिनर को तो आपको उसे लंबा स्पेल देना होता है। छोटे स्पेल कुलदीप के लिए मददगार साबित नहीं हो रहे हैं। लंबे स्पेल से आपको अपनी गलतियों

को सुधारने का मौका मिलता है। लय में आने के लिए समय चाहिए होता है। शुभमन गिल ने उस लिहाज से उनका साथ नहीं दिया।

कैफ ने पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री की उस बात का भी समर्थन किया जिसमें शास्त्री ने कुलदीप को विदेशी परिस्थितियों में भारत का नंबर एक स्पिनर बताया था। कैफ का मानना है कि न्यूजीलैंड के खिलाफ आगामी दो मैचों की सीरीज में जहां पिचें सपाट या कम टर्न वाली हो सकती हैं, कुलदीप की भूमिका बेहद अहम होगी। उन्होंने कहा, मैं रवि शास्त्री की इस बात से सहमत हूं कि कुलदीप विदेशी परिस्थितियों में हमारे नंबर–1 स्पिनर हैं। टर्निंग पिचों पर आपको सिर्फ सटीकता चाहिए होती है। आप एक ही जगह पर गेंदबाजी करके किसी तरह विकेट ले लेंगे। लेकिन न्यूजीलैंड में आपको वैसी टर्निंग पिचें नहीं मिलेंगी। मुझे लगता है कि कुलदीप सपाट पिचों पर या ऐसी पिचों पर जहां ज्यादा टर्न न हो, एक बड़ी भूमिका निभाएंगे। कप्तान और टीम प्रबंधन को उनका आत्मविश्वास ऊंचा रखना होगा।

कोलंबो में 23 अगस्त से शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट मैच को लेकर कैफ का अनुमान है कि भारत मध्य प्रदेश के ऑफ स्पिनर सारांश जैन को डेब्यू का मौका दे सकता है। गॉल टेस्ट में श्रीलंका के बाएं हाथ के बल्लेबाज निरोशन डिकवेला और सोनल दिनुशा ने रन बनाए थे, ऐसे में कैफ का मानना है कि बाएं हाथ के बल्लेबाजों के खिलाफ सारांश जैन काफी उपयोगी साबित हो सकते हैं। कैफ ने कहा, मुझे लगता है कि भारत कोलंबो में सारांश जैन को खिलाने पर विचार कर सकता है। जिन दो बल्लेबाजों ने रन बनाए, डिकवेला और सोनल, वे दोनों बाएं हाथ के हैं। एक समय ऐसा आया जब शुभमन गिल को बल्लेबाजी के दौरान एक ऑफ स्पिनर की तलाश थी। श्रीलंका के इन फॉर्म बाएं हाथ के बल्लेबाजों को देखते हुए, हो सकता है कि कुलदीप को बाहर बैठना पड़े। पहले यह मुकाबला सुथार बनाम सारांश था, अब यह कुलदीप बनाम सारांश होगा। मालूम हो कि कुलदीप यादव ने 2018 में अपने टेस्ट डेब्यू के बाद से अब तक 19 टेस्ट मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 23.36 की औसत से 80 विकेट लिए हैं। इस दौरान उनके नाम चार चार–विकट और पांच पांच–विकट हॉल दर्ज हैं, और उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 40 रन देकर 5 विकेट लेना रहा है। हालांकि, इस साल उन्होंने दो टेस्ट खेले हैं, जिसमें 41 से अधिक के औसत से केवल चार विकेट ही उनके हाथ लगे हैं। श्रीलंका के खिलाफ दूसरा टेस्ट मैच 23 अगस्त से कोलंबो में शुरू होने जा रहा है।

टेस्ट क्रिकेट को वैभव की जरूरत: द्रविड़ ने सूर्यवंशी के तीनों प्रारूप में खेलने का किया समर्थन

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत के पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ का मानना है कि टेस्ट क्रिकेट को वैभव सूर्यवंशी जैसे खिलाड़ी की जरूरत है। द्रविड़ ने कहा कि सूर्यवंशी को लाल गेंद क्रिकेट के लिए काफी समय और एक्सपोजर की जरूरत है। वैभव सूर्यवंशी इस बार दलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन की तरफ से खेल रहे हैं। दलीप ट्रॉफी की शुरुआत रविवार से हो रही है। वैभव इस दौरान टीम के उपकप्तान की भूमिका में भी नजर आने वाले हैं। वैभव सूर्यवंशी क्रिकेट की नई सनसनी बनकर उभरे हैं और उन्होंने आईपीएल 2026 में दमदार प्रदर्शन किया था। वैभव ने इसी साल इंग्लैंड के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय में डेब्यू किया था। वैभव अगले महीने होने वाले एशियाई खेलों के लिए भी भारतीय टीम का हिस्सा हैं। राहुल द्रविड़ जब राजस्थान रॉयल्स के मुख्य कोच थे तो राजस्थान फ्रेंचाइजी ने वैभव को आईपीएल नीलामी में खरीदा था। अब द्रविड़ ने वैभव को टेस्ट क्रिकेट के लिए तैयार बता दिया है। द्रविड़ ने यूरोपियन टी20 प्रीमियर लीग (ईटीपीएल) के अनावरण के लिए डबलिन में एक इवेंट में कहा, यह बहुत अच्छी बात है कि वैभव को भारत में आईपीएल के जरिए कुछ सीमित ओवर प्रारूप में क्रिकेट खेलने का अनुभव मिल रहा है, लेकिन उन्हें भारतीय घरेलू सिस्टम में वापस जाकर लाल गेंद क्रिकेट खेलने और अपने टेस्ट करियर को आगे बढ़ाने का भी समय मिल रहा है। इस युवा बल्लेबाज को सीमित ओवर और टेस्ट क्रिकेट के बीच संतुलन बनाने की जरूरत है। हम सभी टेस्ट क्रिकेट को जिंदा देखना चाहते हैं और आगे बढ़ते देखना चाहते हैं। हमें वैभव जैसे खिलाड़ियों की जरूरत है ताकि वे सभी प्रारूप में खेल सकें। द्रविड़ ने कहा, अच्छी बात यह है कि उसे कुछ समय लगेगा, उसे कुछ अनुभव की जरूरत होगी। उसे बहुत सारा टेस्ट क्रिकेट खेलने का मौका

मिलेगा। उसने शायद उतना टेस्ट क्रिकेट नहीं खेला है जितना सीमित ओवर प्रारूप में क्रिकेट खेला है। वह सिर्फ 15 साल का है। मुझे लगता है कि आपको उसे कुछ समय देना होगा और उसके साथ सब्र रखना होगा। जाहिर है वह शुरू से ही बहुत सफल रहा है, लेकिन वह अपने उतार–चढ़ाव से गुजरेगा और मुझे लगता है कि लोगों को उसके साथ सब्र रखना होगा। द्रविड़ का मानना है कि टी20 मौकों का पीछा करने के बजाय घरेलू टेस्ट क्रिकेट खेलने से बतौर बल्लेबाज वैभव का विकास होगा।

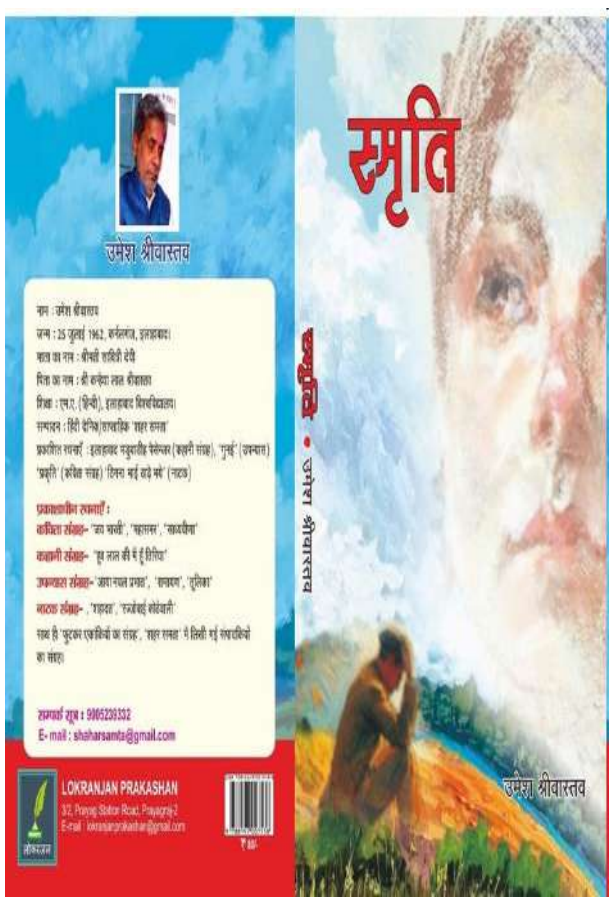

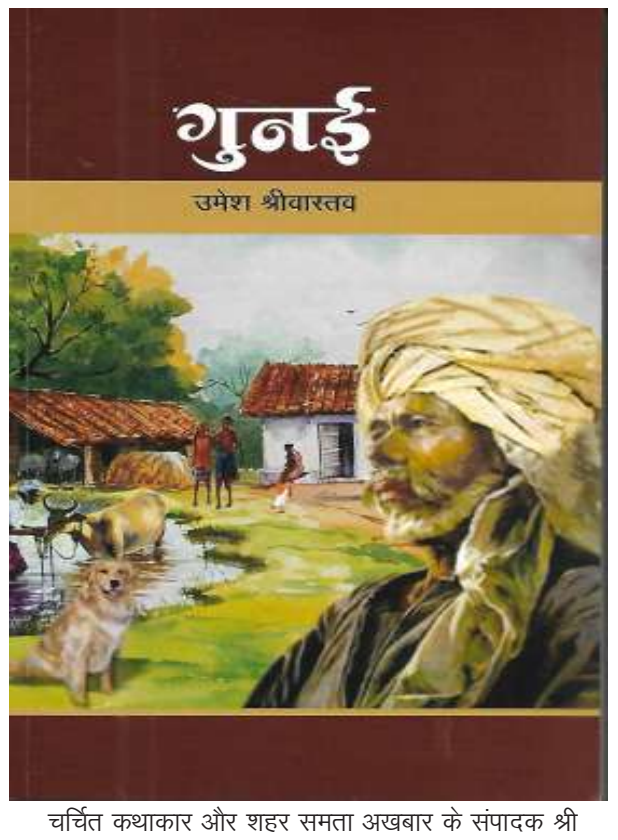

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

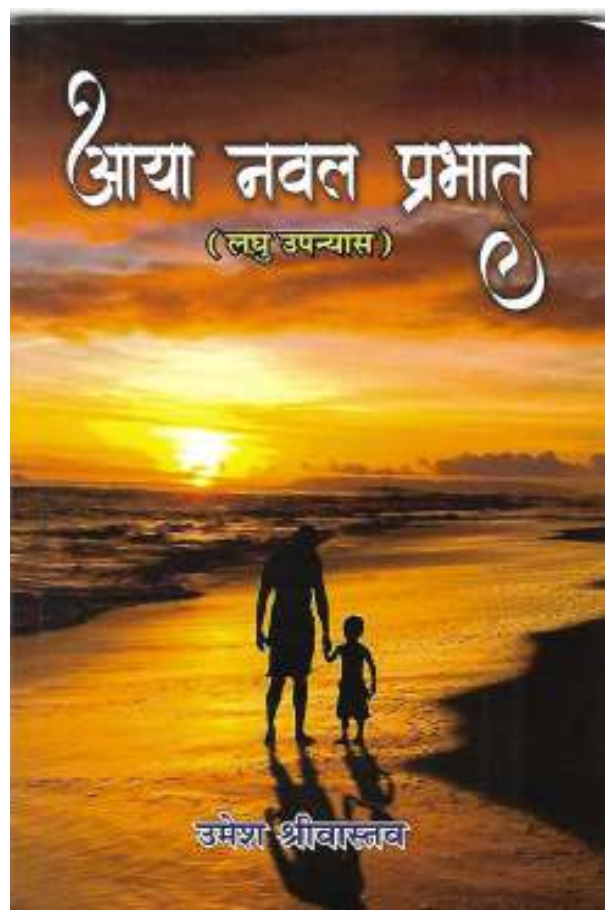

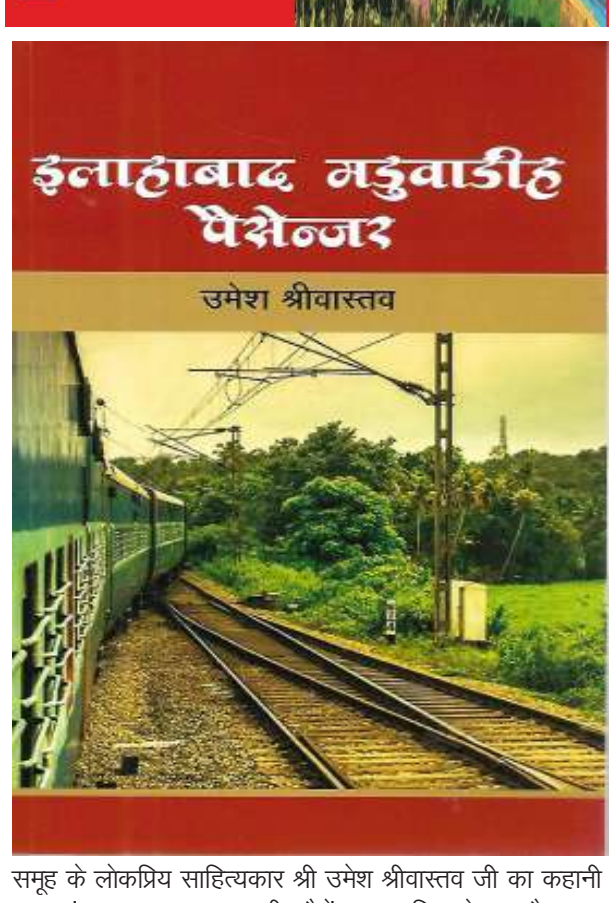

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

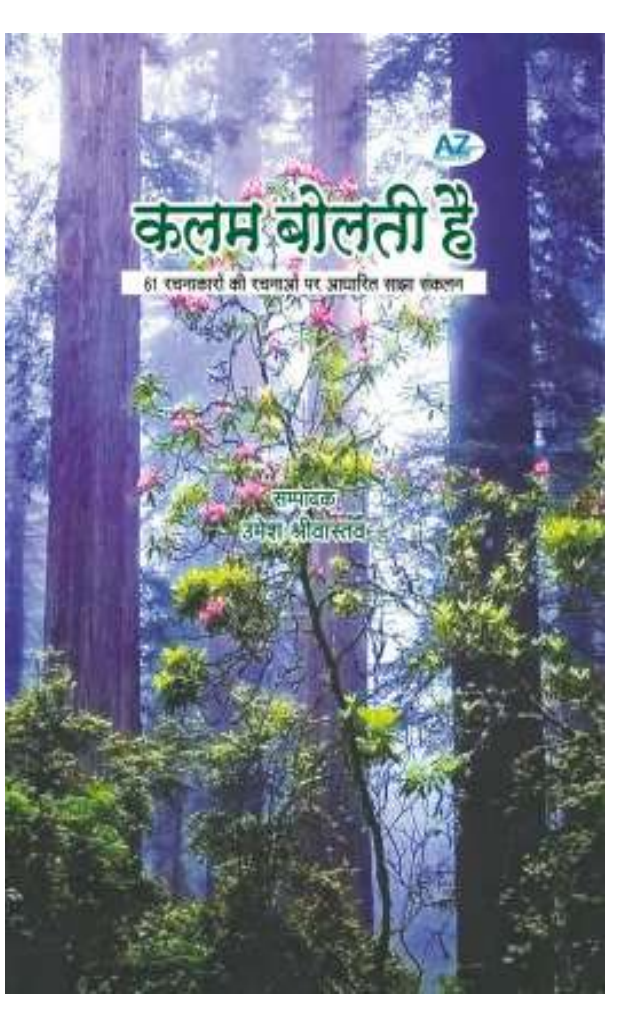

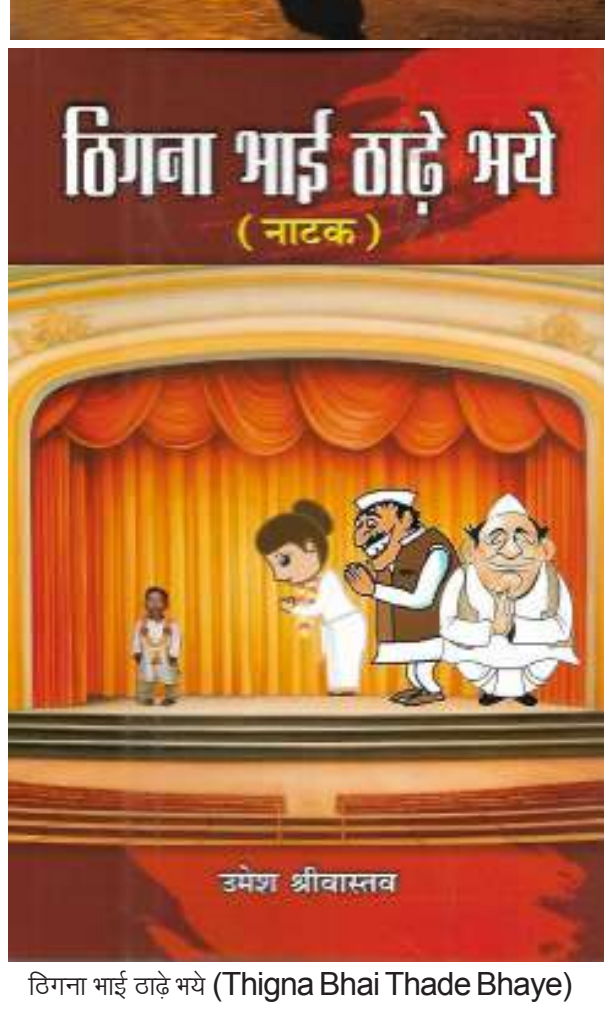

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

यूएस के साथ व्यापार वार्ता नाकामयाब, आज से कनाडाई उत्पादों पर लगेगा 50प्रतिशत शुल्क

वॉशिंगटन,एजेंसी। अमेरिका शनिवार तड़के कनाडा के करीब 20 अरब डॉलर मूल्य के उत्पादों पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाने वाला है। आखिरी समय में हुई बातचीत के बावजूद दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते को लेकर सहमति नहीं बन सकी। इससे पहले से तनावपूर्ण संबंधों में और खटास बढ़ गई है। अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जैमीसन ग्रीर ने शनिवार आधी रात से कुछ देर पहले पत्रकारों के साथ एक कॉल में पढ़े गए बयान में कहा, आज रात कनाडा ने इस सप्ताह की शुरुआत में तय शर्तों के तहत व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने से इनकार कर दिया। अमेरिका ने कनाडा को हमारे बाजार में किसी भी बड़े निर्यातक के मुकाबले सबसे बेहतर शर्तें देने की पेशकश की थी। इसके बावजूद कनाडा की नई मांगों और कुछ अन्य प्रतिबद्धताओं से पीछे हटने के कारण पिछले कुछ दिनों में बनाई गई संतुलित व्यवस्था बिगड़ गई। कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने जवाब दिया, श्श्अमेरिका की प्रस्तावित शर्तों में आखिरी समय में किए गए बदलाव अनुचित और आर्थिक रूप से नुकसानदेह थे। उन्होंने किसी भी समझौते की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर दिए। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से लगाए जाने वाले आयात शुल्क से कनाडा से अमेरिका भेजे जाने वाले कुल उत्पादों में से करीब पांच प्रतिशत प्रभावित होंगे। इनमें हॉकी स्टिक से लेकर जीभ की जांच में इस्तेमाल होने वाली लकड़ी की छोटी छड़ियां तक शामिल हैं। हालांकि, इसका राजनीतिक असर आर्थिक नुकसान से भी बड़ा होने की संभावना है। पिछले साल दोनों देशों के बीच करीब 880 अरब डॉलर मूल्य की वस्तुओं और सेवाओं का कारोबार हुआ था। इन शुल्कों को शुरुआत में बुधवार रात 12 बजकर 1 मिनट से लागू किया जाना था। लेकिन ट्रंप ने बातचीत जारी रखने के लिए समय सीमा तीन दिन बढ़ा दी थी। इसके बावजूद दोनों देश तय समय तक किसी समझौते पर नहीं पहुंच सके।

5 साल की हिंद रजब जिस कार में थी, उस पर सैनिकों ने 355 गोलियां बरसाई थीं

यरुशलम/काहिरा,एजेंसी। इस्राइली सेना ने 934 दिन बाद पहली बार स्वीकारा है कि जनवरी 2024 में गाजा में पांच साल की फलस्तीनी बच्ची हिंद रजब और उसके परिवार को ले जा रही कार पर उसके सैनिकों ने ही गोलियां चलाई थीं। सैनिकों ने हिंद और उसके परिवार की कार पर 355 गोलियां चलाईं थीं। यह घटना दुनियाभर में गहरा आक्रोश पैदा कर चुकी है और अब सेना ने इस मामले में आपराधिक जांच के आदेश दे दिए हैं। 29 जनवरी 2024 को गाजा शहर के तेल अल–हावा इलाके में हिंद रजब अपने छह परिजनों के साथ एक कार में यात्रा कर रही थी, तभी इस्राइली सेना ने कार पर गोलीबारी कर दी। हिंद और उसकी चचेरी बहन लायन को छोड़कर बाकी सभी की मौके पर ही मौत हो गई। लायन ने फलस्तीन रेड क्रिसेंट सोसाइटी की आपात सेवा को फोन किया और गोलियों व चीख–पुकार के बीच हालात बताती रही, तभी कॉल कट गई। इसके बाद हिंद ने खुद एक कॉल का जवाब दिया और अरबी भाषा में ऑपरेटर से कहा, टैंक मेरे बगल में है...डर लग रहा है, प्लीज आ जाओ। फिर गोलियों की आवाज गूंजी और कॉल अचानक कट गई। एजेंसी फलस्तीन रेड क्रिसेंट सोसाइटी ने बच्चों को बचाने के लिए एक एंबुलेंस भी भेजी। इसकी जानकारी पहले ही इस्राइली सेना को दे दी गई। इसके बावजूद, इस्राइली सेना ने एंबुलेंस पहुंचने के बाद उस पर भी एक गोला दागा, जिसमें दो पैरामेडिक्स की मौके पर ही मौत हो गई। हिंद का शव तब मिला जब इस्राइली सैनिक इलाके से पीछे हटे। गोलियों से छलनी कार में हिंद, उसकी बुआ, चाचा और चार चचेरे भाई–बहनों के शव मिले।

सुबह की अरदास के दौरान मचा हंगामाय दो लोग घायल

कनाडा के अल्बर्टा प्रांत के एडमंटन स्थित नानकसर गुरसिख गुरुद्वारा में शादी समारोह से पहले सुबह की प्रार्थना के दौरान एक व्यक्ति ने कथित तौर पर हंगामा किया। उसे काबू करने की कोशिश के दौरान हुई झड़प में दो पुरुषों पर चाकू से हमला हुआ। पुलिस ने एक व्यक्ति को मौके से गिरफ्तार किया है और दोनों घायलों की चोटें गंभीर नहीं हैं। हमले की वजह और यह हेट क्राइम था या नहीं, इसकी जांच जारी है। घटना के बावजूद गुरुद्वारे में शादी समारोह तय समय पर आयोजित किया गया। यह घटना एडमंटन के उत्तर–पूर्वी बाहरी इलाके में स्थित नानकसर गुरसिख गुरुद्वारा मंदिर में सुबह 5 बजे के कुछ समय बाद हुई। एडमंटन पुलिस सर्विस ने बताया कि 14 स्ट्रीट और हॉर्सहिल रोड के पास हुई घटना की सूचना मिलने पर अधिकारियों ने मौके से एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। आपातकालीन सेवाओं ने दो घायलों का इलाज किया। दोनों को लगी चोटों को जानलेवा नहीं बताया गया है। पुलिस ने अभी तक हमले के पीछे की वजह का खुलासा नहीं किया है। यह भी स्पष्ट नहीं किया गया है कि मामले की जांच संभावित घृणा–प्रेरित अपराध यानी हेट क्राइम के तौर पर की जा रही है या नहीं। गुरुद्वारा प्रतिनिधि हरमीत सहगल ने बताया कि एक व्यक्ति गुरुद्वारे के अंदर आया और बाद में होने वाली शादी से पहले चल रही सुबह की प्रार्थना में बाधा डालने लगा। ग्लोबल न्यूज के मुताबिक, सहगल ने कहा, "वह अंदर आया और हंगामा करने लगा। हमारी सुबह की प्रार्थना बाधित हो गई। जो लोग प्रार्थना कर रहे थे, उन्होंने इस व्यक्ति को देखा।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र

शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र

मोबाईल नम्बर 9190052 39332

.919450482227

नवाज शरीफ की 2019 वाली स्क्रिप्ट दोहरा रहे इमरान, क्या सरकार के साथ इलाज के नाम पर हो चुकी है डील ?

इस्लामाबाद,एजेंसी। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान जेल में हैं। उनके स्वास्थ्य को लेकर परिवार तथा उनकी पार्टी लगातार चिंता जता रही है। 18 अगस्त 2026 को सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें अस्पताल ले जाने का आदेश दिया और 20 अगस्त को सरकार ने कहा कि जरूरत पड़ी तो विदेश में इलाज की संभावना भी हो सकती है, लेकिन कानूनी प्रक्रिया जरूरी होगी। क्या यह घटनाक्रम 2019 में नवाज शरीफ को मिली मेडिकल राहत की याद दिलाता है? आइए, विस्तार से इस पूरे मामले को समझते हैं? इमरान खान किन मामलों में जेल गए थे? पाकिस्तान में अबतक कितने प्रधानमंत्री जेल जा चुके हैं? पाकिस्तान की राजनिति में ऐसा क्यों होता है? पाकिस्तान की राजनीति में जेल, अदालत और सत्ता का रिश्ता हमेशा बेहद उलझा हुआ रहा। अब पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के स्वास्थ्य को लेकर पैदा हुआ नया विवाद इसी पुराने राजनीतिक पैटर्न की याद दिला रहा है। 18 अगस्त 2026 को पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने जेल में बंद इमरान खान को अस्पताल ले जाने का आदेश दिया। इसके दो दिन बाद

सरकार ने संकेत दिया कि अगर जरूरत पड़ी तो उन्हें इलाज के लिए विदेश भी भेजा जा सकता है, लेकिन इसके लिए कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होगा। यही वजह है कि 2019 का नवाज शरीफ प्रकरण फिर चर्चा में आ गया। उस समय भी मामला जेल में बंद एक पूर्व प्रधानमंत्री की बिगड़ती सेहत से शुरू हुआ था। मेडिकल आधार पर राहत मिलने के बाद नवाज शरीफ को इलाज के लिए लंदन जाने की अनुमति मिली थी। उनकी मौजूदा चिकित्सा स्थिति तथा कानूनी स्थिति अलग है। इसलिए सवाल डील का कम और पाकिस्तान की उस राजनीतिक परंपरा का ज्यादा है। इसमें जेल में बंद बड़े नेताओं को स्वास्थ्य के आधार पर राहत मिलने के बाद सियासी समीकरण बदलते रहे हैं। चलिए पहले इतिहास में चलते हैं और जानते हैं कि नवाज शरीफ के साथ क्या हुआ था।

नवाज शरीफ उस समय भ्रष्टाचार के एक मामले में जेल की सजा काट रहे थे। उनकी तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया और मेडिकल आधार पर राहत का रास्ता खुला। फरवरी 2019 में इस्लामाबाद हाईकोर्ट ने मेडिकल आधार पर उनकी जमानत याचिका खारिज की थी, लेकिन बाद के महीनों में उनकी स्वास्थ्य स्थिति को लेकर मामला फिर गंभीर हुआ। अक्तूबर–नवंबर 2019 में उन्हें मेडिकल आधार पर जमानत मिली और इलाज के लिए विदेश जाने का रास्ता तैयार हुआ। नवंबर 2019 में पाकिस्तान सरकार ने नवाज शरीफ को इलाज के लिए चार सप्ताह के लिए विदेश जाने की एक बार की अनुमति दी थी। सरकार ने इसके लिए एक क्षतिपूर्ति बांड की शर्त भी रखी थी। बाद में लाहौर हाईकोर्ट के आदेश के बाद विदेश जाने की प्रक्रिया आगे बढ़ी और नवाज शरीफ लंदन चले गए। उनके साथ उस समय उनके भाई शहबाज शरीफ भी थे। यानी 2019 का घटनाक्रम सीधे तौर पर जेल से शुरू होकर मेडिकल जांच, अदालत की राहत और फिर विदेश में इलाज तक पहुंचा था। आज इमरान खान के मामले में भी जेल से अस्पताल और फिर संभावित विदेश इलाज की बात सामने आई है। यही समानता दोनों मामलों को एक साथ देखने की वजह बन रही है। यही इस पूरे मामले का सबसे अहम सवाल है। 20 अगस्त को पाकिस्तान सरकार ने संकेत दिया कि अगर इमरान खान के इलाज के लिए जरूरत पड़ी तो उन्हें विदेश भेजने की संभावना पर विचार किया जा सकता है। हालांकि सरकार ने साफ किया कि इसके लिए कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होगा। यानी अभी ऐसा कोई फैसला नहीं हुआ है कि इमरान खान को लंदन या किसी दूसरे देश भेजा जा रहा है। सरकार की बात इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि जेल में बंद किसी बड़े राजनीतिक नेता को विदेश इलाज के लिए भेजना केवल मेडिकल फैसला नहीं रहता। इसमें अदालत, जेल प्रशासन, सरकार और सुरक्षा एजेंसियों की भूमिका भी जुड़ जाती है। नवाज शरीफ के मामले में भी विदेश जाने के लिए अदालत और सरकार के स्तर पर कई कानूनी कदम उठे थे। उनके लिए पहले मेडिकल आधार पर राहत मिली और फिर विदेश जाने की अनुमति की प्रक्रिया पूरी हुई थी। इसलिए इमरान के मामले में अभी सबसे सही बात यही है कि विदेश इलाज का विकल्प खुला बताया गया है, लेकिन उसे अंतिम फैसला नहीं माना जा सकता। अगर आगे अदालत या सरकार की ओर से औपचारिक अनुमति मिलती है, तभी इसे नवाज शरीफ वाले घटनाक्रम की अगली कड़ी माना जा सकेगा।

दोनों मामलों में पहली बड़ी समानता यह है कि दोनों पूर्व प्रधानमंत्री जेल में थे और स्वास्थ्य को लेकर गंभीर सवाल उठे। दोनों मामलों में मेडिकल जांच और अदालत की भूमिका सामने आई। दोनों मामलों में विदेश में इलाज की संभावना भी चर्चा में आई। लेकिन दोनों की कानूनी स्थिति बिल्कुल समान नहीं है।

सैन्य अखबार के संपादक समेत तीन बर्खास्त, जानिए किस रिपोर्ट को लेकर हुआ एक्शन

वाशिंगटन,एजेंसी। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, पेंटागन के वरिष्ठ अधिकारियों और निकाले गए पत्रकारों का हवाला देते हुए बताया गया है कि पेंटागन ने शुक्रवार को स्टार्स एंड स्ट्राइप्स के प्रकाशक, प्रधान संपादक और पश्चिम एशिया के संवाददाता को नौकरी से निकाल दिया। आलोचक इसे अमेरिकी युद्ध विभाग के जबरदस्ती दबाने वाले पुराने तरीकों की वापसी बता रहे हैं। यह कार्रवाई रक्षा विभाग की ओर से सरकार से फंड पाने वाले सैन्य समाचार पत्र की कानूनी संपादकीय आजादी को सीमित करने की कोशिश है, जो ईरान में चल रहे युद्ध के बीच की जा रही है। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, ये बर्खास्तगी उस आउटलेट की कई खोजी रिपोर्टों के बाद हुई हैं। जिनमें सर्विस मेंबर्स की गंभीर मुश्किलों को उजागर किया गया था। इनमें

विमानवाहक पोत यूएसएस ब्राहम लिंकन पर नौसेना के नाविकों की नौ महीने की लंबी तैनाती भी शामिल है। शुक्रवार को प्रधान संपादक एरिक स्लाविन, प्रकाशक मैक्स लेडरर और पश्चिम एशिया के संवाददाता लारा कोर्टे को नौकरी से निकालने का नोटिस दिया गया। वॉर डिपार्टमेंट ने इन लोगों को नौकरी से निकालने पर कोई टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। स्लाविन ने बताया कि उन्हें मिले नोटिस में जुलाई में सीबीएस न्यूज को दिए गए एक इंटरव्यू का जिक्र था, जिसमें उन्होंने एडिटोरियल मामलों में दखलअंदाजी की बात कही थी। स्लाविन ने साफ तौर पर कहा था कि आउटलेट को पब्लिक रिलेशंस का जरिया बनाना हद पार करने जैसा होगा। वे स्वतंत्र रिपोर्टिंग की जरूरत पर कायम रहे। जनवरी में, पेंटागन ने स्वतंत्र समाचार प्रवाह की गारंटी देने वाले लंबे समय से चले आ रहे नियमों को रद्द कर दिया। मुख्य प्रवक्ता शॉन पार्नेल ने अखबार से जागरूक विचारों से ध्यान भटकाने वाली सामग्री से दूर रहने की मांग की। यह अनिवार्य कर दिया कि सामग्री सुव्यवस्था और अनुशासन के अनुरूप हो। अप्रैल में, आंतरिक संपादकीय लोकपाल जैकलिन स्मिथ को एजेंसी के हस्तक्षेप की आलोचना करने के बाद बर्खास्त कर दिया गया। कैप्टन विलियम अर्बन, जो पेंटागन के पूर्व वरिष्ठ प्रवक्ता हैं, जिन्हें हाल ही में प्रकाशक के सैन्य उप प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया है। उन्होंने शुक्रवार को एक पत्र प्रकाशित कर संपादकीय रूप से स्वतंत्र रिपोर्टिंग प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। हालांकि, सैन्य प्रवक्ताओं की नियुक्ति के साथ–साथ अनुभवी समाचार कक्ष नेतृत्व को व्यवस्थित रूप से हटाना प्रत्यक्ष समाचार प्रबंधन की ओर एक स्पष्ट बदलाव का संकेत देता है।

विवेक रामास्वामी के समर्थन में उतरे जेडी वेंस, बोले– मेरा दोस्त शानदार उम्मीदवार

वॉशिंगटन,एजेंसी। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने ओहायो के गवर्नर पद के लिए रिपब्लिकन उम्मीदवार विवेक रामास्वामी के समर्थन का ऐलान किया है। वेंस ने रामास्वामी को अपना दोस्त बताते हुए उनके नेतृत्व की क्षमता पर भरोसा जताया। यह समर्थन ऐसे समय आया है, जब हाल में एक राजनीतिक सम्मेलन में रामास्वामी को विरोध और हूटिंग का सामना करना पड़ा था। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे डी वेंस ने ओहायो के गवर्नर पद के चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के अपने साथी और अच्छे दोस्त विवेक रामास्वामी का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि भारतीय–अमेरिकी कारोबारी से नेता बने रामास्वामी एक शानदार गवर्नर साबित होंगे। 41 वर्षीय रामास्वामी को वेंस का समर्थन ऐसे समय मिला है, जब कुछ सप्ताह पहले सिनसिनाटी में यंग अमेरिकन्स फॉर लिबर्टी सम्मेलन के दौरान उनके बयानों से नाराज भीड़ ने उन्हें हूट किया था और मंच से जाने के लिए मजबूर कर दिया था। वेंस ने शुक्रवार को ओहायो में एक रैली को संबोधित करते हुए कहा, हमारे पास एक शानदार गवर्नर पद के उम्मीदवार हैं और मेरा दोस्त विवेक रामास्वामी ओहायो के अगले शानदार गवर्नर भी होंगे।

वेंस ने कहा, मुझे नहीं लगता कि उस दिन विवेक को मतदान केंद्र जाने के लिए किसी को प्रोत्साहित करने की जरूरत थी। जब मतपत्र पर आपका नाम होता है, तो किसी को आपको मतदान करने के लिए कहने की जरूरत नहीं होती। लेकिन विवेक ओहायो राज्य के लिए एक शानदार गवर्नर साबित होंगे।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।

अमेरिका में भारतीय खाना ट्रेंड में, पाकिस्तान में चाट और ढाका में साड़ी की मांग क्यों बढ़ी ?

न्यूयॉर्क/लाहौर/ढाका,एजेंसी। भारतीय खानपान और पहनावे का आकर्षण अब भारत की सीमाओं से बाहर भी साफ दिखाई दे रहा है। पाकिस्तान में दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे और मुगलई व्यंजन पसंद किए जा रहे हैं, जबकि ढाका की शादियों में बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियों की मांग बनी हुई है। अमेरिका में क्षेत्रीय भारतीय भोजन प्रमुख खानपान रुझानों में शामिल हुआ है। ऐसे में सवाल है कि क्या सांस्कृतिक पसंद राजनीतिक सीमाओं से ज्यादा मजबूत साबित हो रही है? भारतीय खानपान और पहनावे का आकर्षण अब भारत की सीमाओं से बाहर भी साफ दिखाई दे रहा है। पाकिस्तान में दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे और मुगलई व्यंजन पसंद किए जा रहे हैं, जबकि ढाका की शादियों में बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियों की मांग बनी हुई है। अमेरिका में क्षेत्रीय भारतीय भोजन प्रमुख खानपान रुझानों में शामिल हुआ है। ऐसे में सवाल है कि क्या सांस्कृतिक पसंद राजनीतिक सीमाओं से ज्यादा मजबूत साबित हो रही है? भारतीय संस्कृति का असर खानपान और पहनावे के जरिए दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में दिखाई दे रहा है।

अमेरिका से लेकर पाकिस्तान और बांग्लादेश तक भारतीय व्यंजन और पारंपरिक परिधान लोगों की पसंद बन रहे हैं। पाकिस्तान के लाहौर और कराची में दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे, मुगलई व्यंजन और कोलकाता काठी रोल आकर्षण का केंद्र हैं। दूसरी तरफ ढाका में बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियां खासतौर पर शादियों में पसंद की जा रही हैं। यह स्थिति इसलिए दिलचस्प है क्योंकि राजनीतिक स्तर पर मतभेदों के बावजूद लोगों की सांस्कृतिक पसंद अलग दिशा में चलती दिखाई दे रही है। अमेरिका में भारतीय भोजन की तस्वीर पिछले कुछ समय में बदली है। भारतीय खाना पहले अक्सर सामान्य करी तक सीमित समझा जाता था, लेकिन अब अमेरिकी उपभोक्ताओं की दिलचस्पी भारत के अलग–अलग क्षेत्रों के व्यंजनों में बढ़ रही है। 2026 के खानपान रुझानों में क्षेत्रीय भारतीय व्यंजनों को शीर्ष पांच में जगह मिली है। अमेरिकी शहरों में भारतीय रेस्तराओं की खोज और बुकिंग में भी तेजी देखी गई है। अब ग्राहक केवल सामान्य भारतीय करी नहीं खोज रहे, बल्कि अलग–अलग इलाकों के खास स्वाद आजमाना चाहते हैं। केरल के नारियल, करी पत्ते, हींग और समुद्री भोजन जैसे स्वाद भी लोगों की पसंद में उभर रहे हैं। इससे भारतीय भोजन की पहचान क्षेत्रीय विविधता के साथ और व्यापक होती दिखाई देती है। पाकिस्तान में भारतीय खानपान की लोकप्रियता खासतौर पर लाहौर और कराची में दिखाई दे रही है। दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे, मुगलई व्यंजन और कोलकाता काठी रोल वहां लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। लाहौर का गवालमंडी और कराची के फूड स्ट्रीट्स भारतीय स्वाद के लिए खास चर्चा में हैं। सोशल मीडिया ने भी इस रुचि को बढ़ाने में भूमिका निभाई है। यूट्यूबर और व्लॉगर दिल्ली, अमृतसर, लखनऊ और दक्षिण भारत के व्यंजनों को अपने वीडियो के जरिए दर्शकों तक पहुंचा रहे हैं। भारतीय शहरों के नाम से जुड़े व्यंजन भी लोगों के बीच खास आकर्षण पैदा कर रहे हैं। इस तरह खानपान ने राजनीतिक सीमाओं से अलग अपनी जगह बनाई है।

बांग्लादेश की राजधानी ढाका में भारतीय साड़ियों का आकर्षण खास तौर पर शादी–ब्याह के मौकों पर नजर आता है। बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियों को वहां केवल पारंपरिक पहनावे के तौर पर नहीं देखा जा रहा, बल्कि इन्हें शादियों में स्टेटस और खास पसंद से भी जोड़ा जा रहा है। भारतीय खानपान की मांग भी वहां बनी हुई है।